RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 5 अंक 1 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

# जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

अगस्त 2021

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

## राजसमंद के किसान के बेटे ने बढ़ाया देश का मान

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

मेवाड़ी जयवर्द्धन

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग

सभी
प्रकार की
खेलकूद
सामग्री
मिलने का
राजसमंद
में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

वगताराम गमेती
सरपंच

सज्जन बाई रेबारी
उपसरपंच

मंजू यादव
ग्राम विकास अधिकारी

समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

अपील

- जल शक्ति अभियान के तहत बरसाती पानी को व्यर्थ न बहने दे।
- पानी की बूंद-बूंद को बचाएं।
- अधिकाधिक पौधारोपण कर उनके रख-रखाव व सुरक्षा करें।
- अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
- जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें।
- बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोके।
- परिवार नियोजन अपनाएं।
- ग्राम पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ बनाएं रखने हेतु प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करावें।

मास्क पहनें, वैक्सीन लगवाएं
वैक्सीनेशन के प्रति सबको जागरूक बनाएं

राजस्थान सरकार एवं जिला प्रशासन द्वारा जारी
कोरोना गाइडलाइन का पालन अवश्य करें। वैक्सीन लगवाएं, मास्क का प्रयोग करें।

ग्राम पंचायत कालीवास, पंचायत समिति देलवाड़ा

# जयवर्द्धन


**सम्पादक एवं प्रकाशक**
ललिता राठौड़

**निदेशक व उप सम्पादक**
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
**सह सम्पादक**
हितेन्द्रसिंह चौहान

**विज्ञापन प्रबंधक**
जितेन्द्र शर्मा
**वितरण विभाग**
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

**कार्यालय पता**
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
**मो. 94142-39648, 96729-80901**

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित


**नोट :** पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।


बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

## सम्पादकीय

# नारायण की प्रेरक पहल

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आज राष्ट्र में निर्माताओं की जरूरत पड़ रही है। राष्ट्र में उभरती समस्याओं के मूर्त समाधान खोजने वाले की जरूरत है। जो अपनी कल्पना को दृढ़ कर किसी भी कार्य को करने का मन बना लेता है। विश्वास को प्रस्फुटित कर अपनी कल्पना को साकार करने की उड़ान भर लेते हैं। ठान लेते हैं हर परिस्थिति का सामना करके इस कार्य को पूर्ण करके ही रहेंगे। इस बात की चिंता छोड़ देते कि कौन क्या कहेगा, सिर्फऔर सिर्फअपने कदम अपने लक्ष्य के सकारात्मक पहलुओं की तरफबढ़ना। निरंतर अभ्यास करें विचारशीलता के साथ प्रयत्नशीलता एक ऐसी शक्ति है, जो पराजय को विजय में परिवर्तित कर देती है। प्रयत्नशीलता के कोई विकल्प नहीं होते, मन में जो स्वप्न उभरते हैं, उन सपनों को दृढ़ संकल्पों में अगर बांध लेते हैं तो निश्चित ही सफलता कदमों को चूमती है।

इसका दूसरा पहलू देखे तो सफलता तक पहुंचने के लिए संघर्षों की बहुत लंबी कहानी, जिसमें तन मन और धन की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। राष्ट्र समाज संस्थान का विकास संसाधनों की गुणवत्ता के बिना कैसे संभव हो सकता है। गुणवत्ता का अर्थ हम शिक्षा और साक्षरता तक सीमित करके छोड़ दे। यह सही नहीं है व्यक्ति की नवीन सृजनात्मकता तथा नवीन प्रवृत्ति संसाधनों की गुणवत्ता का प्रमुख घटक है।

ऐसे ही हमारे राजसमंद के गौरव केरड़ी गांव के  नारायण गुर्जर, जिनकी प्राथमिक शिक्षा दीक्षा राजकीय प्राथमिक विद्यालय केरडी के एक सरकारी विद्यालय में हुई है। जो आज वर्तमान में एक कृषि वैज्ञानिक के रूप में उभरकर सामने आ रहे हैं, जिन्हें भारत में ही नहीं वरन देश विदेश में भी उनके द्वारा किए गए इस सराहनीय कार्य को सराहना व सम्मान मिल रहा है। इन सबके पीछे इस विजय सफलता के पीछे कोई न कोई संघर्ष की कहानी जरूर रही होगी। संघर्ष की इस कहानी में सहयोग व मार्गदर्शन बन प्रेरित करने वाले पिता, गुरु, मित्र और स्वयं के अटूट दृढ़ संकल्प को लिए राजसमंद के सपूत नारायण गुर्जर ने कम पानी में खेती करने की सफलता प्राप्त कर विश्व स्तर पर अपनी मातृभूमि को सम्मान दिलाया।

हर रोज एक नया काम होता है, हर नए काम का उपहास होता है।
नए काम के उपहास के शव पर, 'मधु' एक नया इतिहास होता है।।


**मधु पालीवाल**
**शिक्षिका, राउप्रावि नांदोली**
**मो. 9079664033**

## इस अंक में खास


1. **कवर स्टोरी 1 :** आधे पानी में बेहतरीन फसल उत्पादन — पेज- 4
2. **अध्यात्म :** जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए... — पेज - 8
3. **दर्द-ए-हाल :** राजसमंद की भलाई न हो, इसी में नेताजी की भलाई ! — पेज- 9
4. **राजसमंद आज कल और कल** — पेज- 10
5. **हास्य व्यंग्य :** तो मैं रिश्ता पक्का समझूं — पेज - 11
6. **राइजिंग अवेयरनेस :** Changing nature of school Administration — पेज-12
7. **पुस्तक समीक्षा :** दलित टोला की व्यथा — पेज - 13
8. **संस्मरण :** गांधी पार्क- उदय से अस्त — पेज - 14
9. **तीखी मिर्ची :** समस्या प्रिय प्राणी — पेज - 16
10. **मेरा गांव मेरे लोग :** प्रहलादजी व धनेश्वरजी की जोड़ी — पेज - 18
11. **पुस्तक समीक्षा :** महकते फूल — पेज - 23
12. **कविताएं :** रूह मिलन की ॠतु : वसंत, सत्य पराजित नहीं होता — पेज- 25
13. **व्यंग्य :** छातीकूटिए अमर रहें — पेज - 27
14. **संस्मरण :** स्कूल - डॉ. राकेश तैलंग — पेज - 28
15. **व्यंग्य :** कारवां गुजर गया, धूल के गुबार देखते रहे — पेज - 31
16. **टेक्नीकल विंडो :** रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन के क्षेत्र में नया कदम पेज - 32

# आधे पानी में बेहतरीन फसल का उत्पादन

***किसी शायर ने क्या खूब कहा है,***
***कभी टूटने लगे हौंसले तो यह याद रखना***
***बिना मेहनत के तख्तोताज नहीं मिलते,***
***ढूंढ लेते हैं अंधेरों में मंजिल अपनी,***
***क्योंकि जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते।***

हम आपको राजसमंद के उस कृषि वैज्ञानिक से आपका परिचय करा रहे हैं। जिसने अपनी छोटी उम्र में कृषि के क्षेत्र में बड़े आविष्कार करके सम्पूर्ण विश्व को चौंका दिया है। इन्होंने लम्बे समय से सच्ची निष्ठा और लगन से मेहनत करने के बाद कृषि के क्षेत्र में एक चमत्कारी उत्पाद बनाने में सफलता हासिल की है। इन्होंने अपने इस **फसल अमृत** प्रोडक्ट को सात देशों में पेटेंट भी करा दिया है।

कहते हैं सफलता किसी की गुलाम नहीं होती है। यह उसी की हो जाती है, जो इसे पाना चाहता है, जो इसके लिए लगातार दिन रात मेहनत करता है और जो मेहनत करता है, निश्चित ही उसे सफलता प्राप्त होती है। ठीक ऐसा ही कुछ हुआ **नारायण गुर्जर** के जीवन में।

राजसमन्द जिला मुख्यालय से दस किलोमीटर दूर बोरज पंचायत का 50 घरों का एक छोटा सा गांव केरड़ी। जहां के अधिकतर लोग खेती पर निर्भर है। अरावली की छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच ऊंचे-नीचे छोटे-छोटे खेत, जिनमें ज्यादातर खेतों में किसान सिर्फ वर्षा ऋतु की एक फसल ही उगा पाते है। यहां के निवासी देवीलाल गुर्जर के घर पर तीन बेटियों के बाद 5 जनवरी 1998 को पुत्र का जन्म हुआ। जिसका नाम नारायण रखा गया। तीनों बड़ी बहनों का लाडला नारायण अपनी बहनों के साथ गांव के प्राथमिक स्कूल में जाने लगा। नारायण शुरू से ही पढ़ाई में बड़ा होशियार था। हमेशा कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता था। पांचवीं की पढ़ाई के बाद पिताजी ने नारायण को राजनगर की विद्या निकेतन स्कूल में दाखिला दिलाया। कहते हैं प्रतिभा कभी छुपी नहीं रह सकती है। विद्या निकेतन में भी मेधावी छात्रों में नारायण की गिनती होने लगी। स्कूल के बाद नारायण पिताजी के साथ खेत पर जाता रहता था। आठवीं तक विद्या निकेतन में पढ़ने के बाद प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश लिया। यहां पढ़ाई के दौरान विज्ञान के विभिन्न मॉडल बनाने का नारायण को अवसर मिला। ज्यादातर छात्र विज्ञान के मॉडल बाजार की महंगी सामग्री खरीद कर बनाते या बना बनाया मॉडल खरीद कर प्रदर्शित करते। इस तरह के पैसों के दुरुपयोग पर नारायण के पिताजी ने कहा कि बेटा यदि प्रयोग करने हैं, तो अपनी इस खेती की असली समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग करो। पिताजी की इस बात से नारायण को एक दिशा मिल गई थी। अब नारायण घर पर गमलों में पौधे उगाकर विभिन्न प्रयोग करने लगा।

**फल व सब्जी के छिलके, जिससे यह पोलीमर बनता है और दूसरी तरफ स्टाल पर बिकता फसल अमृत उत्पाद।**

जवाहर नवोदय विद्यालय की ओर कई विज्ञान मेलों में जाने में नारायण अब बड़ी रुचि लेने लगा। उसे स्कूल और पढ़ाई के बाद जब भी फुर्सत मिलती अपने गमलों के साथ प्रयोग में लग जाता। बारहवीं की परीक्षा अच्छे नंबर से उत्तीर्ण करने के बाद नारायण के जेहन में अपने भविष्य को लेकर बहुत ऊंचे ख्वाब पल रहे थे। गुरूजनों ने भी नारायण की प्रतिभा के अनुसार उसे आईआईटी में प्रवेश लेने के लिए सहमती जताई।

नारायण ने आईआईटी में प्रवेश परीक्षा के लिए दिन-रात पढ़ाई की, मगर कड़ी मेहनत के बावजूद कामयाबी नहीं मिली। नारायण इससे काफी उदास हो गया था। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लग रहा था, क्योंकि उसे अपेक्षित सफलता नहीं मिली थी। ऐसे समय में गांव का बचपन का मित्र पूरणसिंह जो नारायण से सीनियर था और समय समय पर नारायण को गाइड भी करता था। उसने नारायण की रूचि के अनुसार उसे कृषि इंजीनियरिंग करने की सलाह दी और नारायण ने महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर में प्रवेश लिया। अब नारायण अपनी रूचि के अनुसार विषय पाकर पूरी लगन के साथ पढ़ने लगा। शीघ्र ही अपनी प्रतिभा के दम पर कॉलेज के प्राध्यापकों का चहेता बन गया। जैसा की नारायण पूर्व में भी कृषि से संबंधित मॉडल बनाया करता था, यहां कॉलेज में उसे ज्यादा अवसर मिलने लगे। उसने कम पानी में फसल कैसे हो सकें, इसके लिए फल व सब्जियों के छिलके को सुखाकर और विभिन्न प्रयोग के बाद एक उत्पाद तैयार किया, जिसे डालने से आधे पानी में फसल उगाई जा सकती है। नारायण लम्बे समय से इसके लिए कई प्रयोग करता था, मगर उसे अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही थी। ऐसे समय में प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन माथुर सर ने इन्हें काफी होंसला दिया और लगातार मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। सन् 2018 में जयपुर में आयोजित विज्ञान मेले में नारायण के इस उत्पाद को प्रथम पुरस्कार मिला, यह नारायण के प्रयोग की पहली सफलता थी। तात्कालीन मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे एवं दिवंगत राजसमन्द विधायक

किरण माहेश्वरी ने इस उत्पाद के मॉडल की बड़ी प्रशंसा की। मुख्यमंत्री ने तो राज्य के सुखा प्रभावित कुछ क्षेत्र में इस उत्पाद के उपयोग का भी आश्वासन दिया। मगर कुछ समय बाद ही चुनाव में सरकार बदल गई और उनका आश्वासन हकीकत नहीं बन सका।

मगर अब नारायण रूकने वाला नहीं था, उसे अब इस उत्पाद के साथ अपना सुनहरा भविष्य दिखाई दे रहा था। इस दौरान उसने अपने मित्र पूरणसिंह राजपूत, कॉलेज के सहपाठी बुद्धि प्रकाश गुर्जर, अंकित जैन और शशिप्रताप सिंह सहित पांचों मित्र ने मिलकर एक स्टार्टअप रजिस्टर कराया। जिसका नाम इएफ(इक्को फ्रेंडली) पोलीमर रखा गया। इस तरह मेन पावर तो मिल गया, मगर प्रोडक्ट बनाने के लिए पैसा और रॉ-मटेरियल (कच्चा माल) की जरुरत पड़ने लगी। घर से पिताजी इतने रुपए नहीं भेजे पाते थे कि प्रयोग में खर्च कर सकें। तब नारायण ने कॉलेज के बाद स्कूली विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाना प्रारंभ किया और अपनी जरूरत पूरी की। कच्चे माल के लिए रात में दस बजे बाद उदयपुर के विभिन्न चौराहे पर ज्यूस की दुकानों के बाहर पड़े फलों के छिलके इकट्ठे करते और अपने कमरे की छत पर उन्हें सुखाते। अपने किराए के कमरे को ही लेबोरेट्री बना दिया। इस तरह पांचों मित्र मिलकर कार्य करने लगे।

## राष्ट्रपति अवार्ड के बाद मिली सपनों को उड़ान

उदयपुर के महाराणा प्रताप कृषि महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान स्टार्ट-अप शुरू किया। फिर दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर कम पानी में फसल उत्पादन के प्रयोग को दिखाने का मौका मिला। इसी प्रोडक्ट के दम पर नारायण गुर्जर को विभिन्न श्रेणी के 7 राष्ट्रीय अवार्ड मिले। साथ ही राष्ट्रपति रामनाथ कोविद द्वारा गांधीयन यंग टेक्नोलॉजी अवार्ड से भी नवाजा गया। इस प्रतियोगिता के बाद रॉयल एकेडमी लंदन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में इन्हें भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला, जहां विश्व स्तर प्राप्त पुरस्कार प्राप्त कर इन्होंने भारत को गौरवान्वित किया। तभी ओकिनावा युनिवर्सिटी जापान द्वारा इनके उत्पाद का कई चरण में परीक्षण किया गया और उसी आधार पर नारायण गुर्जर व स्टार्टअप- साथी पूरणसिंह को ढाई वर्ष के लिए जापान में बुलाया गया। जापान में सारा खर्च ओकिनावा युनिवर्सिटी द्वारा उठाया गया। जापान एक टापू के रूप में बसा हुआ है, जहां बारिश में खेतों की मिट्टी व खाद बहकर समुद्र में चला जाता है। इस समस्या से निजात पाने के लिए नारायण के प्रोडक्ट को आजमाया गया और वहां की मिट्टी के अनुकूल उत्पाद तैयार किया गया। जापान में वहां की मिट्टी के आधार पर उर्वरक क्षमता बढ़ाने के लिए प्रोडक्ट तैयार करने के लिए कृषि मंत्रालय जापान द्वारा भी नारायण को पुरस्कृत किया गया। इसी तरह आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, सिंगापुर सहित सात अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं लगभग 20- 25 राष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

## फसल अमृत प्रोडक्ट 6 देशों में पेटेंट

कम पानी में फसल उत्पादन के इको फ्रेंडली पोलीमर के फसल अमृत प्रोडक्ट को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलने के बाद छह

देशों में पेटेंट करवा दिया है, जिसमें भारत के साथ जापान, यूएसए, आस्ट्रेलिया, चाइना, साउथ अफ्रीका शामिल है।

## बड़े ऑफर के बावजूद किया इन्कार

फसल अमृत प्रोडक्ट सभी देशों में मांग के बाद पेटेंट शेयर करने के लिए कई अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा इन्हें बड़े बड़े ऑफर दिए गए। साथ ही कई देशों द्वारा उनके देश में प्रोडक्शन के लिए आमंत्रित किया गया, लेकिन नारायण एवं उनके साथी सारे ऑफर ठुकरा दिए और इनका कहना है कि पूरे विश्व में उनका प्रोडक्ट भारत से ही निर्मित होकर जाएगा। इससे यहां के लोगों को रोजगार भी मिलेगा और देश का मान भी बढ़ेगा। देश की कई कंपनियों ने भी ऑफर दिया, मगर इनका मानना है कि बड़ी कंपनियों के साथ जुड़कर पैसे तो कमा सकते हैं, मगर किसानों को सस्ता प्रोडक्ट नहीं दे पाएंगे। इसलिए किसी भी कंपनी का ऑफर इन्होंने स्वीकार नहीं किया।

## देश में 10 हजार किसान लाभान्वित

फसल अमृत प्रोडक्ट के जरिये वर्तमान में हमारे देश में करीब 10 हजार किसान लाभान्वित हो रहे हैं। उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में टाटा ट्रस्ट के साथ मिलकर किसानों तक उत्पाद पहुंच रहा है और वहां के किसानों को चमत्कारिक परिणाम भी दिख रहे हैं। जैसे जैसे यह प्रोडक्ट पहुंच रहा है, वैसे वैसे इसकी मांग बढ़ती जा रही है।

## प्रोडक्ट की खासियत

यह प्रोडक्ट मिट्टी में पानी सोखने की क्षमता दोगुनी बढ़ा देता है। जिस फसल में 10 दिन में सिंचाई की जरूरत है, वहां इस प्रोडक्ट का उपयोग करने के बाद 20 दिन बाद सिंचाई की जरूरत पड़ती है। साथी ही यह प्रोडक्ट मिट्टी उर्वरक क्षमता व खाद को भी बहने से रोकता है, जिससे फसल में अच्छी पैदावार होती है। इस तरह कम पानी में भी अधिक उपज प्राप्त की जाने लगी है। बारिश के दिनों में भी लंबे समय तक बारिश न आने पर भी यह प्रोडक्ट फसल को सुखने से बचाता है। यह प्रोडक्ट मुख्यतया जैविक पोलीमर है, जो विभिन्न फलों व सब्जी के छिल्को द्वारा बनाया जाता है। इससे पर्यावरण को कोई नुकसान भी नहीं है।

## भविष्य की प्लानिंग

ईएफ पोलीमर के प्रबंधक नारायण गुर्जर ने बताया कि फसल अमृत उत्पाद की मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हमारा प्रयास है अधिक उत्पादन कर सस्ती दर पर प्रत्येक किसान को लाभान्वित किया जाए। अब प्रत्येक फसल के अनुसार उसकी पानी की जरूरत के आधार पर अलग अलग प्रोडक्ट के परीक्षण भी चल रहे हैं और जल्द ही

फसल अनुसार अलग अलग प्रोडक्ट जारी किए जाएंगे। विदेशों में भी बढ़ती मांग को देखते हुए भारत में ही प्रोडक्शन बढ़ाकर लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाएंगे।

## उपयोग का तरीका

फसल अमृत को बुवाई के दौरान बीज के साथ खेत में डाल दिया जाता है, जिससे यह प्रोडक्ट मिट्टी में मिलकर पानी को रोकता है। यह प्रोडक्ट खेत की सतह पर नहीं रहना चाहिए, वरना पानी को ऊपर ही रोक देता है। इसलिए मिट्टी में अच्छी तरह से मिलना जरूरी है। एक बीघा में यह प्रोडक्ट 2 किलो डाला जाता है। एक किलो प्रोडक्ट का मूल्य लगभग 350 रुपए है।

## जापान से भारत को सीखने की जरूरत

ढाई वर्ष तक जापान यात्रा के बाद लौटे नारायण का कहना है कि ग्रंथों में बात करते हैं कि पहले सतयुग था, लेकिन मैं कहता हूं कि जापान में आज भी सतयुग है। वहां के लोगों में ईमानदारी बहुत है और विदेशियों की हमेशा मदद करते हैं। वहां के लोगों में देशभक्ति बहुत है। देश की किसी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना बहुत बड़ा अपराध समझते हैं। वहां भ्रष्टाचार व अपराध भी न के बराबर है। इसलिए नारायण का कहना है कि भारतवासियों को जापान जैसे देश से काफी कुछ सीखना चाहिए।

**विजय शर्मा**
उप संपादक जयवर्द्धन

# जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए...

कुछ सौभाग्यशाली लोगों के व्यक्तिगत अनुभव को छोड़ दें तो पिछला वर्ष कहीं से भी सुखद नहीं रहा। इसने लगभग सबको ही छोटी.बड़ी चोट दी है। आशा करते हैं कि यह वर्ष वैसे ही बीत गया हो जैसे कंस वध के बाद मथुरा का एक बुरा कालखण्ड समाप्त हो गया थाए या रावण वध के साथ समस्त मानवता के लिए एक बुरा समय बीत गया था।

आज यूँ ही सोच रहा था] सीता हरण के बाद निर्जन वन में बिलखते राम के लिए वह समय कितना बुरा रहा होगा। परिवार से दूर वन में रह रहे, उन तीन लोगों के पास हृदय को शीतलता दे सकने लायक यदि कुछ था तो एक दूसरे के प्रति परस्पर स्नेह और साथ ही था और जब रावण ने सीता हरण करके उस 'साथ की शक्ति' में भी सेंध लगा दी तो कितने टूटे होंगे वे... पर केवल वर्षभर लगे थे राम को उबरने में। एक वर्ष बाद ही मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि के साथ राम सिया के संग अयोध्या के राजसिंहासन पर विराजमान हो गए। दिन यूं ही बदलते हैं।

राजा हरिश्चंद की कहानी बचपन में इतनी बार सुनी थी कि मन में बस सी गई है। उनके दिन भी कितनी तेजी से बदले थे न! संसार में सर्वश्रेष्ठ राजा की प्रतिष्ठा के साथ अपने सिंहासन पर बैठे हरिश्चन्द ने कब सोचा होगा कि अगले ही दिन वे इतने दरिद्र हो जाएंगे कि स्वयं को भी बेंच देना होगा, पर यह भी हुआ और अपने मालिक के प्रति महान निष्ठा रख कर श्मशान में अपने ही पुत्र के शवदाह का कर वसूलते चांडाल हरिश्चन्द ने भी नहीं सोचा होगा कि क्षण भर में ही उन्हें उनका पुराना साम्राज्य और हंसता खेलता परिवार वापस मिल जाएगा। पर वह भी हुआ... दिन यूं भी बदलते हैं।

धर्मग्रन्थ हमें अवसाद के अंधेरे से निकालने के लिए ही लिखे गए हैं। धार्मिक कथाओं को सुनने- सुनाने की परम्परा हमें निराशा से आशा की ओर ले जाने के लिए बनाई गई हैं। पुरानी कथाओं में स्वयं को रख कर देखें तो उम्मीद का धागा कभी नहीं टूटता। विश्वास बना रहता है कि अच्छे दिन आएंगे और अच्छे दिन आते ही हैं।

संसार के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं के साथ खड़ी उस विशाल कुरुसेना के विरुद्ध उतरे पाँच पांडव भाइयों को विजय क्यों मिली? केवल और केवल इसी कारण कि अर्जुन ने अपने रथ की बागडोर भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में दे दी थी। हार जीत सब तुम्हारे हाथ, ले चलो जिधर ले जाना है। जीवन जीने का इससे बढ़िया तरीका नहीं हो सकता कि जीवन के ड्राइविंग सीट पर ईश्वर को बिठा दें। वह जैसी परिस्थिति बना दे, खुशी खुशी उसी के हिसाब से काम करें और निश्चिन्त रहें कि वह ठीक करेगा। वह करता है। वह कभी कभी निहत्थे को भी विजय दिलाता है। देखिएगा अपने आस पास, आपको असंख्य उदाहरण दिखेंगे।

मेरे बाबा हमेशा गाते थे। सीताराम सीताराम सीताराम कहिए, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए... तो साहब! जैसे राम रख रहे हैं, खुशी खुशी वैसे ही रहिये। सब शुभ होगा, सब सुन्दर होगा।

नववर्ष आप सबके लिए मंगलमय हो! जय हो

**सर्वेश तिवारी श्रीमुख**
**गोपालगंज बिहार**

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

# राजसमंद की भलाई न हो, इसी में नेताजी की भलाई!

एक जमाना था, जब कर्तव्य विमुख हुए राजा को उलाहना देने भर से राजा को कर्तव्य बोध हो जाता था और वो जनहित में अग्रसर हो जाता था। अब वो समय वो नहीं रहा। अब जनता भले गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाए तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। नीचे दिया गया दोहा तो जयपुर राजघराने के मूर्धन्य कवि रुबिहारी का ही है। इस दोहे ने राजा की आंखे खोल दी थी–

**नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।**
**अली कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल।**

राजसमन्द के विकास के परिप्रेक्ष्य में क्या कहें और किसे कहें। विधायक से कुछ आस लगाएं तो झट से चाटुकार बोलते है कि सरकार हमारी नहीं है। अभी वो नई नई है, अनुभवहीन है। सीखने में लगी है। हर कोई अपनी मां के पेट से सीख कर नहीं आता, वगैरा वगैरा... ।

सांसद से अपेक्षा करें तो दूजे गुट के दरबारी बोलते हैं कि राजसमन्द संसदीय क्षेत्र काफी फैला हुआ होने के साथ कई जिलों में बंटा हुआ है। सांसद मैडम के लिए जैसा राजसमन्द है, वैसा ही नाथद्वारा या ब्यावर, जैतारण या गोटन है। वे पूरे संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है, अकेले राजसमन्द का नहीं।

खैर, कोई बात नहीं। राजसमन्द की जनता ने इन सब बातों को देख कर और दिवंगत विधायक के आश्वासनों और दिखाए गए दिवास्वप्नों से तंग आकर परिषद में कांग्रेस का बोर्ड बनाया। कांग्रेस से उम्मीद भरी निगाहों से देखते हैं, तो उनके पास जाने से पहले कानों में उनके नेता का ब्रह्म वाक्य गूंजने लगता है कि यदि इस बार कांग्रेस का विधायक नहीं बना तो तुम, तुम्हारे और हम हमारे।

बदकिस्मती से कांग्रेस प्रत्याशी मात्र 5000 वोटों से हार गए। हालांकि पिछली हार के मुकाबले ये हार काफी कम अंतर की रहा और कांग्रेस क्षेत्र में काम कर आगामी विधानसभा चुनावों में ये सीट जीत सकती है, पर साहब की संकुचित सोच ये होने न देगी और अगली बार भाजपा इसका फायदा उठाकर ये सीट यूं ही निकाल ले जाएगी, ऐसी उम्मीद है। अब बेचारी जनता आस लगाए तो किस दल से या किस नेता से ? किरण जी के आकस्मिक निधन से उत्पन्न हुए राजनीतिक शून्य से राजसमन्द की दोनों पार्टियों के कार्यकर्ताओं के पास अपने आपको साबित करने का खासा मौका उपचुनाव में भी था और आगामी विधानसभा चुनाव और आम चुनाव में भी है। संभावना यही है कि दीयाजी अगला चुनाव राजसमन्द से नहीं लड़ेगी, पर हमारे कार्यकर्ताओं को अपने आप पर कतई भरोसा नहीं है। वे तो अपने आकाओं का हुक्म बजाने में ही मशरूफ रहना पसंद करते है, वो ही उनका कम्फर्ट ज़ोन भी है। मुझे तो किसी की भी कोई तैयारी नज़र आ नहीं रही है। ये ज़रूर है कि जब चुनावों की घोषणा होगी, तब वे टिकट के लिए भागदौड़ कर अपना अस्तित्व और इस धरा पर अपनी मौजूदगी ज़रूर जताएंगे।

कुछ में थोड़ा बहुत दम नज़र आता है, पर वे अपने आपको परिषद तक सीमित रखने में अपनी भलाई समझते है, क्योंकि इससे आगे तो मेहनत के साथ साथ लुटाने को पैसा भी चाहिए। इन सभी से आगे कांग्रेस में दो एक नेता हैं, उनमें से एक तो काफी क़ाबिल भी है और वे किसी दबाव में नज़र नहीं आते, पर वे आपसी गुटबाज़ी से ही मात खा जाते है। टांग खिंचाई के चलते उन्हें आगे बढ़ने नहीं दिया जाता। भाजपा में तो टिकटार्थियों का मेला लगता है, जो सिर्फ चुनावीकाल में दौड़ में दिखाई देने का नाटक करते है। चुनाव लड़ कर अपने आप को साबित करने का माद्दा उनमें भी नहीं।

कुल मिलाकर राजसमन्द की राजनीति का भविष्य बाहरी और संवेदनहीन लोगों के हाथों में ही दिख रहा है और हां, सभी समस्याओं, मांगों का जस का तस रखने में ही नेताओं को अपनी भलाई नज़र आती है।

**नीलेश पालीवाल**
**एडवोकेट राजसमंद**
**मो. 94141-71719**

# राजसमंद आज कल और कल

## आइए जानें अपने शहर को

# राजतंत्र, धर्मतंत्र और लोकतंत्र की योजक रेखा

विगत अंक में हमने उदयपुर रियासत और द्वारकाधीश मंदिर की सकारात्मक युति से इस नगरी के ढांचागत और संस्थायी विकास की आकार ले चुकी गति की कतिपय बानगियों को परखा। इस दृष्टि से दूसरे गियर पर कांकरोली को लाने और निरंतर पानी में सैलाब लाने वाली सुकृतियों में पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ के गोस्वामी ब्रजभूषण लाल जी महाराज को याद किया जाना प्रासंगिक होगा।

उदयपुर में महाराणा फतहसिंह जी और तत्पुत्र भोपालसिंह जी कांकरोली में गो. ब्रजभूषणलाल जी और नाथद्वारा में गोविन्दलालजी में एक बात समान दृष्टव्य रही। वह थी मेवाड़ में विकास के लिये भगीरथ प्रयास करने की यथेष्ट इच्छा शक्ति। दोनों ही धर्माचायों की अल्प वय और संरक्षक अभिभावकों का न होना, उदयपुर महाराणाओं का इन पर संरक्षण की विशेष दृष्टि का कारण बना।

इसी दृष्टि से उत्साहित होकर नाथद्वारा में इस युग में उल्लेखनीय जनहित कारी कार्य हो पाये। शैक्षिक क्षेत्र में यहां एक सुदृढ़ शैक्षिक ढांचे को गढ़कर तिलकायत श्री गोविन्दलाल जी ने उल्लेखनीय कार्य किये जिनमें गोविन्द विद्यालय,पुस्तकालय, वाचनालयए राष्ट्रीय विद्यापीठ, बालिका विद्यालय और साहित्य मंडल का विकास/भूमि आवंटन एवं शिक्षा, साक्षरता के लिये एक उर्वर वातावरण का विकास करना उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। नवीन मोहल्लों, बस्तियों का विकास और जल स्रोतों के नवीनीकरण ने नाथद्वारा वासियों में चेतना प्रसार के लिये उचित प्रयास किये।

विगत अंकों में कहा भी गया है कि दोनों ही शहर लगभग एक ही दिशा में विभिन्न प्रकार की कार्य प्रक्रिया के साथ विकास का खाका बुन रहे थे। सहोदर भाव का जो सोच इन समयों में रहा वह अतुलनीय कहा जा सकता है। कांकरोली के प्रसंग में भी यह समय ढांचागत के साथ स्थायी विकास का स्मरणीय युग रहा। इस समय देखरेख के लिये यहां उदयपुर महाराणा द्वारा प्रबंधक या मुंसरिम की व्यवस्था भी कर दी गयी थी। यह कांकरोली के सुनियोजित विकास के लिये देखरेख वाली व्यवस्था थी। विक्रम सं.1976 में पीठ के तिलकायत हो जाने और किशोरावस्था में प्रवेश करते करते कांकरोली को भी श्री ब्रजभूषण लाल जी के नेतृत्व में विकास के पंख फैला उड़ने के अवसर मिलने लगे। विट्ठल विलास बाग का विकास,यहां घरों और मनोरंजन के साधन यथा स्वीमिंग पूल, चिड़िया घर का निर्माण मरम्मत कार्य भी हुआ।

शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में जहां इस नगर में पं.जगन्नाथ शास्त्री, बालकृष्ण शास्त्री, कंठमणि शास्त्री,पं.गोपाल चतुर्वेदी और जटाशंकर शास्त्री को आदर पूर्वक बांसवाड़ा, दतिया, मथुरा, ध्रांगध्रा से बुलाकर बसाया गया जिससे यहां एक अकादमिक आभा मंडल का विकास हुआ। इन विद्वत् जन की विद्यानुरागिता का लाभ मिला ब्रजभूषण लाल जी को जिनके अन्दर शैक्षिक और सांस्कृतिक जागृति का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। फलस्वरूप वे अपनी दूरस्थ यात्राओं में प्राचीन वस्तुओं का संकलन,चित्र,मूर्ति, मुद्रा आदि के संग्रह के प्रति जागरूक हुए। कालांतर में इन्हीं से यहां विश्व वस्तु संग्रहालय विकसित हो सका। कांकरोली के बहुमुखी उत्थान के प्रति सकारात्मक सोच ने इस युग में अनेक यात्राएं जिन्हें, जैसाकि गत अंक में हमने 'परदेस करना' कहा, संपादित की गयीं। कृष्णगढ़, बीकानेर, सांभर, डाकोर, मरेठ, बोरसद, बहादुरपुर, संखेड़ा, बड़ौदा, बड़नगर, सूरत, बुरहानपुर ऐसे कुछ नाम हैं। कांकरोली को इन यात्राओं से पर्याप्त ख्याति मिली।

कांकरोली के सांस्कृतिक इतिहास में वि.सं.1981 से 1987 तक का समय महत्वपूर्ण है जब कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए। जहां एक ओर परदेस कर कांकरोली को धार्मिक व इतर क्षेत्रों के विकास हेतु आर्थिक सहाय्य मिला वहीं एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में वि.सं.1985 में उसे विद्या विभाग मिला। यह नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की तरह संस्कृत और हिन्दी शास्त्र व साहित्य का अकूत विद्या केन्द्र था। देश के बड़े शोधज्ञ साहित्य कारों के आगमन व उत्कृष्ट प्रकाशन का यह सशक्त माध्यम बनकर उभरा। महाराणा भोपालसिंह जी द्वारा रुचिपूर्वक इसके विकास में योगदान किया गया। पौष कृष्ण 9,वि.सं.1994 को इसके दस वर्ष पूर्ण होने पर दशाब्दी महोत्सव का आयोजन भी हुआ। इस अवसर पर हिन्दी और संस्कृत कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ और पहली बार कांकरोली में हाकी और बालीबाल के टूर्नामेंट्स आयोजित हुए। तभी से खेल जगत् में कांकरोली से श्रेष्ठ खिलाड़ियों की खेप ने इस शहर को राष्ट्र स्तर पर नाम दिया।

विद्या विभाग के साथ ही कांकरोली क्षेत्र में शिक्षा के महत्वपूर्ण युग का प्रारंभ हुआ जब कार्तिक शुक्ल 11,वि.सं.1994 को बालकृष्ण विद्याभवन का महाराणा भोपालसिंह जी के हाथों उद्घाटन हुआ। यह कांकरोली में शिक्षा क्षेत्र की एक महत्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ था, जिसकी शुरुआत अंग्रेजी माध्यम के स्कूल के रूप में हुई और बाद के वर्षों में तो यह क्षेत्र के विद्यार्थियों की जरूरतों की पूर्ति का केन्द्र ही बन गया। इसी समय कांकरोली में द्वारकेश व्यायामशाला, ब्रह्मचर्याश्रम और बालिका शिक्षा क्षेत्र में उस समय का महत्वपूर्ण प्रकल्प द्वारकेश बालिका विद्यालय भी प्रारंभ हो गया। यह युग नगर विकास के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का युग कहा जा सकता है। विभिन्न धर्मशालाओं, बिजली, लोक शिक्षण हेतु श्रमजीवी रात्रि पाठशाला, पुस्तकालय, वाचनालय,पक्की सड़कों और पोस्ट व टेलिग्राफआफिस के रूप में जन सुविधाओं का युग था यह।

जैसाकि ऊपर कहा गया है, जनाकांक्षी विकास की दिशा में ढांचागत और स्थायी प्रगति के कार्य साथ साथ चलते रहे। इस संदर्भ में बात अधूरी रह जायेगी यदि तब की छोटी सी बस्ती कांकरोली में रेलमार्ग और हवाई मार्ग के प्रारंभ होने का जिक्र न किया जाये। बर्मा शेल कंपनी द्वारा करांची-बांबे मार्ग पर उड़ने वाले हवाई जहाजों( सी प्लेन ) को राजसमंद झील की चादर पर लेंड कर फ्यूएल सप्लाई का यह स्टेशन था। और भी, कार्तिक शुक्ल 05,वि.सं.1987 को महाराणा भोपालसिंह जी और श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज के संयुक्त प्रयासों से मावली-मारवाड़ यूसीआर रेल्वे लाइन का प्रारंम्भ हुआ। लगभग नब्बे वर्ष पूर्व यह रेलमार्ग मीटर गेज़ के रूप में प्रकाश में आया। एक शताब्दी व्यतीत होने जाने के कगार पर तमाम दावों के बाद राजकीय प्रयास मानों हम ही से पूछ रहे हैं, क्या यही विकास है? स्पष्ट है, दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में योजनाएं ज्ञापनों की रेड लाइट्स पर खड़े हो ग्रीन लाइट का इन्तजार ही करती हैं। क्यों? क्योंकि राजतंत्र, धर्मतंत्र और लोकतंत्र के मध्य एक संतुलित प्रबंधकीय दृष्टि से विकास का सपना बुना जाना जुझारू जोश की अपेक्षा रखता है।

... निरन्तर

**प्रस्तोता :**

**डॉ. राकेश तैलंग**
**वरिष्ठ साहित्यकार**
**द्वारकेश मार्ग, कांकरोली**
**मो. 9460252308**

# तो रिश्ता पक्का समझूं

वीरू की असीम याचना पर उसका मित्र जय रिश्ता लेकर मौसी के घर पहुंचा।

राम राम मौसी !

खुश रहो बबुआ।

जय- अरे मौसी अभी तक टिकी हुई हो लगता है दोनो वैक्सीन के अलावा बूस्टर डोज भी ले लिया है।

**मौसी-** अरे हां बेटा। पहली बार सरकार ने आश्वासन के बाद कुछ मुफ्त में दिया तो लगवाय लिए।

**जय-** चलो बढिया है इसी तरह बनी रहो... मौसी मैं अपने दोस्त वीरू के लिए तुम्हारी लड़की बसंती का हाथ मांगने आया हूं।

**मौसी-** क्यों वीरू क्या आईसोलेशन में है जो खुद नही आया?

**जय-** दरअसल मौसी काफी बिजी शिडयूल है उसका। मरने तक की फुर्सत नही उसे इसलिए उसके बिहाफ में मैं चला आया।

**मौसी-** अरे ऐसी क्या व्यस्तता। काहे किसी कंपनी समूह का मालिक है तुम्हारा वीरू?

**जय-** अरे एक नही पांच पांच समूह का मालिक है मौसी।

**मौसी-** अरे वाह ! किस प्रकार का काम होता है उसके मालिकाना समूह में?

**जय-** प्रोडक्शन, इम्पोर्ट, एक्सपोर्ट सबकुछ होता है मौसी।

मौसी-तनीक विस्तार से बताओ बबुआ।

**जय-** दरअसल मौसी ऐसा है कि हमारा वीरू चार साहित्यिक व्हाटसएप ग्रुप और एक पारिवारिक ग्रुप का मालिक(एडमिन) है। उसके समूह में कहानी कविता व्यंग्य के उत्पादन से लेकर विभिन्न व्हाटसएप समूह से गुड मार्निंग, गुड इवनिंग सहित मौलिक और फारवार्डेड विचारों का आयात-निर्यात होता रहता है।

**मौसी-** (खीजते हुए) मतबल कोई जिम्मेदारी नहीं उठा रखी उसने?

**जय-** अरे बिलकुल मौसी। जिम्मेदारी उठाने के लिए ही तो बेगम की चाह में गुलाम बादशाह के साथ तनाव में दिन गुजार रहा है बेचारा।

मौसी( आश्चर्य से)- हयं बेगम, गुलाम, बादशाह मतलब ताश और जुआ खेलता रहता है?

जय-छीं छीं ऐसा नहीं है मौसी। दरअसल बेगम यानि तुम्हारी बसंती की चाह में दिन भर गाना एप्प पर गुलाम अली की गजल और बादशाह का सांग सुनता रहता है।

मौसी( मुंह से मास्क हटाते हुए)- कहने का मतलब अपनी कोई पूछ-पहचान नहीं उसकी !

जय-कमाल करती हो मौसी। अम्बुजा सिमेंट से भी बड़ी पहचान है उसकी और पूछ तो पूछो ही मत, शायद ही कोई ऐसा दिन हो जो बड़े बड़े सम्मानित व्यक्ति वीरू का शुक्रिया धन्यवाद और आभार ना प्रकट करते हो !

मौसी (बड़ा सा मुंह खोलकर)-ऐसा क्या ?

जय (जेब से मोबाईल निकालकर दिखाते हुए)- विश्वास ना हो तो खुद ही देख लो।

मौसी (गर्दन उचका मोबाईल देखते हुए)- वीरू क्या समाजसेवी या वीवीआईपी है जो बड़े बड़े लोग आभार प्रकट करते है !

जय- दरअसल मौसी वो अपने प्रत्येक फेसबुक फ्रेंड की सभी पोस्ट पर बड़ी तन्मयता से बधाई और शुभकामना संदेश देता रहता है तो रिप्लाय में वे सभी आत्मीय आभार प्रकट करते हुए वीरू को धन्यवाद ज्ञापित करते है।

मौसी (खिसियाते हुए)-ओह तो निठल्ला कुछ करता धरता नहीं।

जय-ऐसा मैनें कब कहा मौसी दरअसल वो एक अच्छा अभिनेता गायक और निर्देशक है।

मौसी (उत्सुकता से)-अरे वाह किस फिल्म में अभिनय और गायन किया है जरा एक का नाम तो बताओ।

जय-एक हो तो बताऊं मौसी ! वो तो मिनट मिनट में विडियो बना लेता है और गायन में तो तानसेन फेल !

मौसी (मुंह खोलते हुए)-ऐसा क्या !

जय- खुदा कसम मौसी टिकटॉक, मौज पर तो इतनी तेजी से विडियो बना लेता है जितनी देर में मैगी भी तैयार नहीं होती। और स्टारमेकर पर गाता ही रहता है। एक राज की बात बताऊं पौने दो दर्जन तो फॉलोअर्स भी है उसके।

जय के जवाबों को सुनकर मौसी की भौंहे तनने लगी।

परिस्थिति भांप जय धीरे से खिसकते हुए बुदबुदाया। तो... मैं ये... रिश्ता पक्का समझूं मौसी !

**विनोद कुमार 'विक्की'**
महेशखूंट बाजार
खगड़िया बिहार 851213

Rasing Awareness

# The Changing Nature of School Administration

The whole world is undergoing radical changes, since the fundamental problems of human relationships are becoming increasingly insoluble, and people are returning towards education as a possible means of practical remedies. Therefore, quality education is not just a want but a need of the hour.

The concept of 'quality' is an integral part of human development. Quality education provides students' an opportunity to reflect on the critical, social, social- economic, cultural, moral and spiritual issues faced by humanity. The process of quality is like a musical theme with variations therefore, change and continuity often work harmoniously together.

Success of an educational institute lies in achieving excellence and the only gateway for achieving excellence is quality. In order to look for quality as strategy as well as quality as value, the leaders need to be professional in their outlook, committed to transparency, unprejudiced, strategists and inspired by the vision of changing situations. Moreover, simplicity, dignity and a composer with total conviction and perseverance are added expectations.

Due to the increasing pressure of expectations, running an educational institute is becoming more challenging day by day. Returns of efforts are expected to be visible in a shorter period of time, therefore, the decisions of heads become riskier.

The head should have the capacity to build a good team in today's most difficult and competitive situation. Ability to delegate effectively, helping employees at work, encouraging them to take decisions, supporting and guiding them is much acknowledged. Long-term effectiveness, genuine courtesy and respect for others is essential. Leaders are expected to put forth efforts to innovate and attempt to raise the standards of the school and build an emotional bond with their subordinates and students. Although it is a simple concept of demand and supply, at a school, due to continuously changing demands, the supply needs a continuous and rapid change.

The quality is not just limited to values or knowledge but it also expands to strategy, to sustain, maintain and evolve with ever-evolving expectations from school and keep on fulfilling the goal of human life.

**Manisha Lashkari**
**Principal, Smart Study InternationalSchool**
**Nathdwara, Rajsamand**

# दलित टोला की व्यथा
## किशन कबीरा की कविताएं

दलितों की व्यथा पिछले कई वर्षों से कही और सुनी जा रही है। समय - समय पर कई महापुरुषों ने दलितों के कष्टों के निवारण हेतु जागृति आंदोलन किए जिनमें अग्रणी हमारे संविधान निर्माता बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर जिन्होंने दलितों के उद्धार के लिए सविधान में कई उपाय सुझाए पर समस्याएं जस की तस आज भी मौजूद है जिसका प्रमाण दलित साहित्य में लिखा जा रहा साहित्य पढ़ कर ही समझा जा सकता है। कवि किशन कबीरा ने दलित टोला नामक अपनी कविता पुस्तक में लगभग सभी कविताओं में दलित समाज के अनेक कष्ट भरे पहलुओं को उजागर किया है। दलित समाज के लिए किए जा रहे खोखले प्रयासों का सच पाठकों के सामने रखने का साहस दिखाया है।

अपनी इस पुस्तक को किशन कबीरा ने अपने माता पिता वह उन जैसे हजारों मेहनतकश इंसानों को समर्पित किया है। अपनी पहली ही कविता 'और मैं कूद गया' में भाई किशन कबीरा ने अपराध बोध की सजा को उम्र कैद में बदल कर दलित टोले पर हो रहे अन्याय के प्रति अपना आक्रोश दिखाया है तो फिर जीत गए युद्ध में गंगा जमुनी रंग में भीगी प्रेम की चादर को तार-तार करने वालों को नंगा किया है। देवपुत्र कविता में खोखली आस्था और आडंबरो पर कटाक्ष किया है। तानाशाह कविता बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करती है । तेज अंधड़ कविता में गरीबी से टूटी टपरी और लोगों का दर्द उजागर किया है। गुरु दक्षिणा के नाम पर कविता में उनकी सोच कुछ अलग ही नजरिया रखती है। पुल के उस और कविता में कवि ने गरीबों की झोपड़ियों में बिताई जिंदगी को सशक्त रूप से उजागर किया है झोपड़पट्टी ओं मैं जीवन बिताने वाले लोगों के दुख दर्द को उजागर किया है, कचरे के ढेर में, कविता में पॉलिथीन कबाड़ की वस्तुओं को ढूंढती और बीनती दलित महिलाओं का बहुत ही बारीकी से वर्णन किया है।

आस्थाओं के सलीब पर कविता अच्छी बन पड़ी है। तिरंगे के रंग कविता में केसरिया सफेद हरे रंग का जो नक्शा कविता में संजोया गया है। सचमुच आज के संदर्भ में मन तक उतर जाता है, सितारे सब कुछ देखते हैं, कविता में कवि ने अपने मनोभावों को एक नए अंदाज में पेश किया है। कंफ्यू कविता दिमाग पर जोर डालती है मां, अत्याचारी, फिर रहे परेशान से जिहादी, राम राम सत्य है, कसाई के हाथ में मुर्गा, कितने भले हैं वे,अर्थी, बेटी, दलित, दूरी और दरार, सूरज, एक नदी की व्यथा, दलित टोला आदि आदि ऐसी कई कविताएं अच्छी बन पड़ी है और बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करती है।

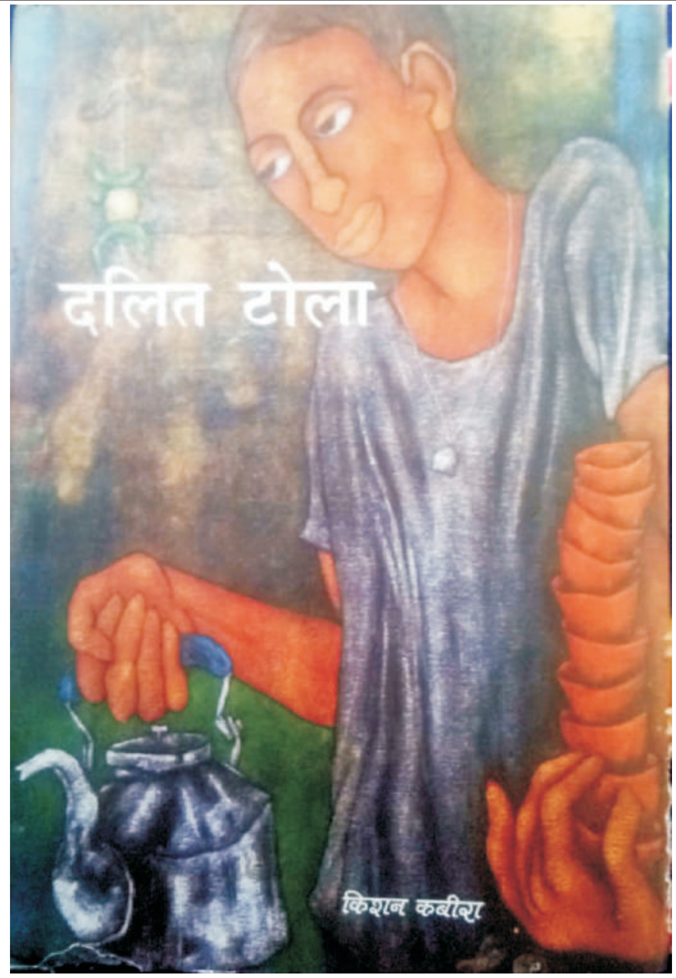


भाई किशन कबीरा के इस हिंदी की पुस्तक का राजस्थानी भाषा में भी दलित बस्ती नाम से सोजत शहर के कवि वह शायर अब्दुल समद राही ने राजस्थानी भाषा में अनुवाद किया है और खूब अच्छा किया है भाई किशन कबीरा राजनगर के निवासी, वे आरके चिकित्सालय से नर्सिंग अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त हो स्वतंत्र लेखन में लगे हुए हैं। वे राजस्थान साहित्यकार परिषद के सक्रिय सदस्य और निरंतर अपनी लेखनी को चलाएं हुए है। आशा है साहित्य जगत में आपकी इस पुस्तक का उचित मूल्यांकन होगा और आगे भी आप निरंतर लेखन के प्रति प्रयासरत रहेंगे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

**अफ़ज़ल खा अफ़ज़ल**
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

संस्मरण

# गांधी पार्क : उदय से अस्त

## आओ संजोए संवारे अपनी एक मात्र संस्था नगर विकास समिति के भवन को

नगर विकास समिति कांकरोली नगर के प्रबुद्ध नागरिकों, मातृशक्ति और युवा शक्ति की अराजनैतिक संस्था है, जिसे कांकरोली तृतीय पीठ प्रन्यास के श्री द्वारकाधीश मंदिर के पीठाधीश ब्रजभूषणलाल महाराज ने सन् 1956 को पट्टा नं. 170 से नि:शुल्क जमीन दी। जिस पर आम जनता के सहयोग से भवन बनाया और गांधी पार्क पर फव्वारे, रपसपट्टी, झूले आदि बाल गोपाल के मनोरंजन के लिए बनाए गए। जमीन बालकृष्ण स्कूल और सुन्दर टॉकीज के मध्य दी, जिसके पूर्व में खेल मैदान व पश्चिम में मुख्य मार्ग है, जहां हरजीवन आश्रम धर्मशाला, श्री द्वारकाधीश मंदिर जाने वाले वैष्णव जाते हैं।

इस पार्क में साहित्य व संस्कृति संध्या के धर्म संतों के प्रवचन, शिक्षक अधिवेशन, सम्मेलन होते रहते, वहीं 1960 में नेफा की एक शाम तो 10 अप्रैल 1991 को राजसमंद जिला बनने के बाद कवि सम्मेलन होते रहे। उसी भवन में वाचनालय, पुस्तकालय, सूचना केंद्र चलने थे, जिसे डॉ. शंभूलालजी और कर्मचारी नेताओं के भाषण व जिला कलक्टर के भी कई बार भाषण हुए।

सन् 1982-83 में हाई स्कूल में जीव विज्ञान विषय खुलने पर कमरों के अभाव के कारण छात्र छात्राओं को पढ़ाने के लिए नगर विकास समिति ने अपना भवन शिक्षण कार्य के लिए दिया। सन् 1993 को जिला मुख्यालय पर राजकीय महाविद्यालय (कॉलेज) के शिक्षण हेतु हाई स्कूल दिया, जहां जिला कलक्टर दीपक उत्प्रेती ने जिला परिषद से 1.50 लाख रुपए के अनुमोदन से नए कमरे बनने पर गांधी पार्क (भवन) खाली हुआ।

तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री विपिन गिरी गोस्वामी ने उक्त भवन को बिना समिति की अनुमति से उदयपुर क्षेत्र के प्रशिक्षण का कांकरोली में उप केन्द्र खोलने पर जिला खेल अधिकारी श्री दामोदर बागोरा व बाद में चांद खां ने यहां हॉकी, कुश्ती कोच के प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिए, जिससे उक्त भवन अमानत में खयानत कर कब्जा कर लिया गया। सन् 1995 को तत्कालीन नगरपालिका अध्यक्ष स्व. परमानंद पालीवाल ने पार्क को उजाड़ कर सड़क पर सब्जी बेचने वालों को रिटेल सब्जी मंडी बना ली। फिर होलसेल का धंधा होने लगा, जिससे स्कूल के छात्र छात्राएं दुर्गंध से दु:खी हो गए, तो सदर

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

मार्ग आए दिन दुर्घटनाएं होने लगी। चलने- फिरने में आम आदमी महिला आदि परेशान हो गए।

श्री द्वारकाधीश मंदिर पीठाधीश ने सब्जी मंडी व पार्किंग व बस स्टैंड निर्माण के लिए सात बीघा जमीन न्यूनतम दर पर जनकल्याण के लिए उपलब्ध कराई। इस पर 19 अगस्त 2008 को सांसद किरण माहेश्वरी ने सब्जी मंडी, पार्किंग व बस स्टैंड का शिलान्यास किया, जिस पर 17.40 लाख रुपए का बजट भी स्वीकृत किया। परकोटा बनाकर धन का दुरुपयोग किया। नगरपरिषद विकास पर टालमटोल करती रही।

तत्कालीन विधायक श्रीमती किरण माहेश्वरी द्वारा नियम विरुद्ध गांधी पार्क में भूमि पट्टे देने का विरोध में नगर विकास समिति सचिव भगवत शर्मा ने अधिवक्ता सम्पत लड्ढा के जरिये याचिका दायर की। इस पर 19 जून 2014 को स्थगनादेश जारी हो गए। चंद लोगों व विधायक ने मालियो आदि को भगवत शर्मा के विरोध में भड़काने पर घर के बाहर सब्जी विक्रेताओं ने प्रदर्शन भी किया।

फिर तत्कालीन जिला कलक्टर केसी वर्मा ने भी दो दिन मौका मुआयना कर सभा कक्ष में वार्ता की, जिस पर कानून के कारण बैठक अनिर्णित रही।

10 जून 2010 को तत्कालीन जिला कलक्टर औंकार सिंह ने शहर के प्रबुद्ध नागरिक, सामाजिक संगठन के लोगों की बैठक कर शहर की प्रमुख समस्याओं पर निर्णय किया, जिसमें बस स्टैंड, सब्जी मंडी रिटेल व थोक मंडी, वाहन पार्किंग, रोडवेज डिपो, सड़कों का निर्माण व नालियों की सफाई पर अधिकारियों की बैठक बुलाकर चर्चा की और अपने साथ गाड़ियों में ले जाकर अवलोकन किया। फिर दबाव बनाकर शीघ्र जेके फैक्ट्री, मंदिर अधिकारी, नगरपालिका आयुक्त व नगर विकास समिति सदस्यों ने सामूहिक सहमति से जेके सर्कल, राडाजी रोड पर सड़क निर्माण व अस्थायी बस स्टैंड प्रारंभ किया एवं इंडोर स्टेडियम भवन मैदान व कृषि मंडी पर होलसेल सब्जी मंडी, किसान भवन आदि के निर्माण की योजना बना शहर के विकास में शुभ कार्य किया और गांधी पार्क खाली कराने के लिए लगे मुकदमे सन् 2009 को जारी किए।

जनता के दबाव से नगरपालिका ने विट्ठलविलास बाग में सुन्दर सब्जी मंडी, पार्किंग, खेल मैदान व इंडोर स्टेडियम निर्माण 2018 में बनकर 1 जून 2018 को व खेल मैदान व इंडोर स्टेडियम 26 अक्टूबर 2018 को खेल अधिकारी चांद खां पठान को हस्तान्तरण किया। फिर भी नगर विकास समिति को भवन हैंडओवर नहीं कर नगरपालिका ने ताला लगा दिया। गत तीन वर्षों में अनदेखी से असामाजिक तत्वों ने भवन की जो दुर्दशा कर खिड़कियां, गेट जलाकर कमरों में बंद लोहे के पिलर, अलमारी आदि अनेक वस्तुएं जला दी। हॉल शराबखोरी का केन्द्र बन गया।

माननीय न्यायाधीश सिविल जज को पेशी के समय चित्रों, फोटो के प्रमाण पत्र, मुकदमे की पेशी के वक्त दुर्दशा दिखाने पर विद्वान न्यायाधीश ने उक्त भवन पार्क नगरपरिषद को देने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर अरविंद कुमार पोसवाल के निर्देश पर उक्त भवन स्टे हटाने के बाद भवन की दुर्दशा से लाखों रुपए में जनता की सम्पत्ति नष्ट कर देने से जनता में आक्रोश है।

अब समय आया है और प्रबुद्ध जनता उसके आजीवन सदस्य बनकर इस भवन और गांधी पार्क को संजाएं- संवारे, जहां फिर वाचनालय, पुस्तकालय, सूचना केंद्र व रंगमंच का निर्माण करें।

**भगवत शर्मा**
सचिव, नगर विकास समिति
कांकरोली, राजसमंद
मो. 94608-02931

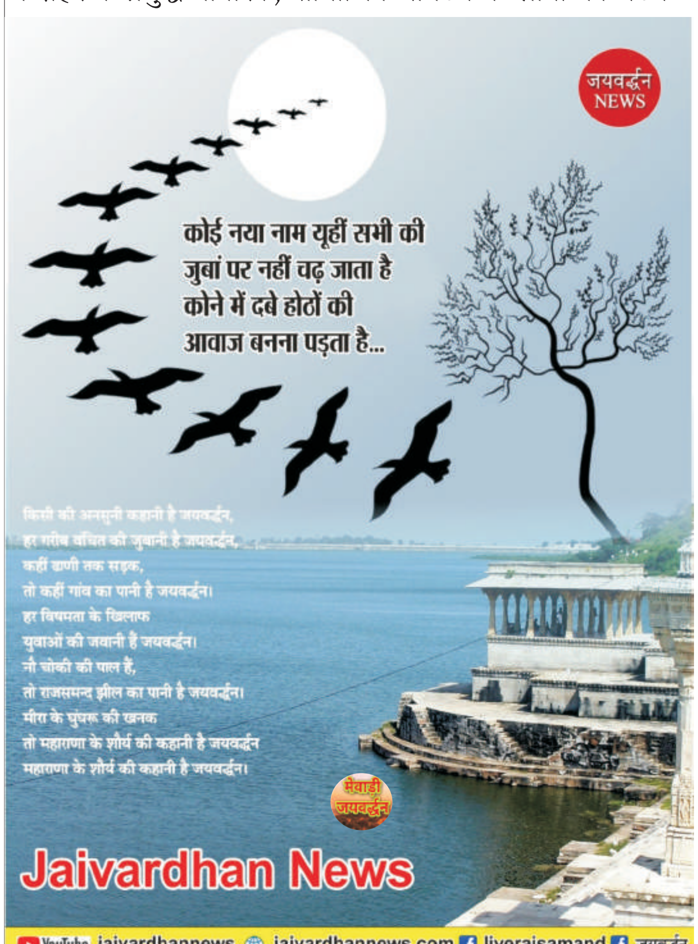


**जयवर्द्धन**
**की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में**
**करें कॉल : 94142-39648**

# तीखी मिर्ची


विजय शर्मा
94142-39648

# समस्या प्रिय प्राणी

ट्रेन में, बस स्टॉप पर बस के इंतजार में या चाय के ठेले पर चाय की चुस्की के साथ देश प्रदेश की समस्याएं अक्सर दो अनजान लोगों के वार्तालाप का जरिया बनती है। शहर की टूटी हुई सड़कें, पेट्रोल के बढते दाम, मंहगाई, सरकारी भ्रष्टाचार या नेताओं के घोटाले, ये सार्वभौमिक समस्याएं जाति धर्म के बंधन से ऊपर उठकर देश को एक सूत्र में बांधती है। ये समस्याएं परमात्मा की कृपा की बारिश की तरह है, जो सभी को समान रूप से प्रभावित करती है। दिनभर की परेशानी के बाद आम आदमी किसी अनजान के साथ इन सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा करता है। जिस प्रकार जिम्मेदार कर्णधार अपनी कार्य निष्ठा को त्यागने का मूल्य जेब में भर कर सुकून महसूस करता है, ठीक वैसे ही देश का आम आदमी उत्तेजना में सरकारी तंत्र और कुछ नेताओं पर गाली के रूप में कुछ शब्द समूह के उच्चारण के बाद स्वयं को बडा सुखी महसूस करता है।

आमजन सभी पर अपनी समदृष्टि रखते हुए अक्सर यह कहता है कि आजकल तो सभी चोर है और समस्या को सदा के लिए स्वीकार कर लेता है। इस तरह दोनों समूह संतोष और शान्ति का अनुभव करते हैं, मगर समाज में कुछ लोग असंतुष्ट रहते हैं, जो क्षेत्र की जन समस्याओं पर सोशल मीडिया पर, विभिन्न प्रदर्शन या आंदोलन करके जनता और जिम्मेदारों का ध्यान आकर्षित करते हैं। इनमें अधिकतर वे प्राणी हैं, जिन्हें सिर्फ  समस्याएं ही प्रिय है, समाधान प्रिय नहीं है। ये रोज नई समस्या की तलाश में निकालते हैं और इनकी झोली कभी खाली नहीं रहती है। इस तरह के एक वर्ग में सत्ता के विपक्षी नेता जिन्हें अपना स्वार्थ सिद्धकर जनता की समस्या बढ़ाने मौका नहीं मिला, तो वे समस्याओं के विरुद्ध खडे हो गए। अब आए दिन खराब सड़क, महंगाई, भ्रष्टाचार या घोटालों के मुद्दे ही इनकी राजनीति चमकाने का जरिया बन गए। विभिन्न समस्याओं के लिए आए दिन प्रदर्शन के बाद अखबार टीवी में अपनी फोटो देखकर इन्हें समस्या में समाधान नजर आता है।

क्षेत्र की समस्याओं के लिए एक वर्ग और भी हैं जो हमेशा चिन्तित रहता है। इस वर्ग के लोग विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्ष होते हैं। इस तरह के लोग अनुभव न होने के बावजूद किसी भी संस्था के अध्यक्ष बनने को आतुर दिखाई देते हैं। इनकी जेब चार से पांच संस्थाओं के कार्ड होते हैं, जिन्हें आवश्यकता अनुसार लोगों के बीच बताकर आत्म

मुग्ध होते हैं। जैसे महामारी बचाओं संस्था, भष्टाचार रोको संस्था या मानव कल्याण संस्था टाइप की संस्थाओं में विभिन्न पदों पर आसीन होते हैं। ये लोग राजनीति और राजनेताओं का घोर विरोधी होते हैं। इन्हे प्रत्येक समस्या का कारण राजनेता नज़र आता है। सब्जी के बढते दाम या बढ़ती गरमी या ठंड सभी समस्याओं के लिए राजनेताओं को दोष देना इनकी आदत रहती है। इनके साथ ज्यादा भीड़ नहीं होती हैं सिर्फ गिने चुने लोग होते हैं, जिनके साथ आए दिन विभिन्न समस्याओं पर ज्ञापन टाइप करवा कर उच्च सरकारी अधिकारी को सौंपते हुए फोटो खिंचवाना इनका शगल होता है। फिर जनता के सामने वोट मांगते नेता की तरह भोली सूरत बनाकर छोटे मोटे सभी पत्रकारों के सामने अनुनय के मुद्रा में खबर व फोटो छपवाने का आग्रह करते हैं। अगले दिन अखबार में छपी खबर को ये फेसबुक या वोट्सएप पर वायरल करते हैं और लोगों की प्रतिक्रिया में वाहवाही के शब्दों में इन्हें समस्या के समाधान सा सुख अनुभव होता है। इस तरह शहर व क्षेत्र की समस्याएं इनके लिए सिर्फ वाहवाही के अवसर बनकर रह जाती है।

इनके अलावा भी कुछ लोग होते हैं, जो क्षेत्र की प्रत्येक समस्या पर मुखर होते हैं। जिन्हें न तो खबर में नाम की जरूरत होती हैं न ही प्रसिद्धि की, मगर इनकी संख्या नगण्य होती है। इनके साथ खड़े रहकर समर्थन करने वाला कोई नहीं होता है। इसलिए इनके लाख प्रयास के बावजूद समस्याएं जस की तस बनी रहती है।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

# दोस्ती और साझेदारी की मिसाल : प्रहलादजी व धनेश्वरजी की जोड़ी

श्री द्वारकाधीश प्रभु की पावन नगरी कांकरोली में विभिन्न प्रकार की विभुतियों ने जन्म लिया और अपने उच्च आदर्श को इस गांव के बाशिन्दों के लिए एक सच्चा और सही इन्सान बनकर जीने की प्रेरणा देकर इस दुनिया को छोड़कर ईश्वर को प्यारे हो गये। आज हम दो ऐसे ही महापुरूषों के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, जिनकी दोस्ती की मिसाल और साझेदारी का पराक्रम हमारे लिए आदर्श है।

स्व. श्री प्रहलाद जी अग्रवाल और स्व. श्री धनेश्वर जी पालीवाल को हमसे अलग हुए ज्यादा वक्त नहीं गुजरा। हम में से कई लोगों ने उनके उल्लेखनीय कार्यो को देखा है और सराहा है।

स्व. मोहन लाल जी अग्रवाल के छोटे मोटे व्यापारी के रूप में इसी गांव कांकरोली में अपनी एक छोटी सी दुकान मालनिया पाड़े में चलाया करते थे। दिनांक 29 मई 1929 को माता श्री चन्द्रकला की कोख से मोहनलाल जी को एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ, जिसका नाम प्रहलाद रखा गया। पिता श्री मोहनलाल और माता श्री चन्द्रकला के लालन पालन में आपने अपना बचपन गुजार कर जवानी में कदम रखा और गांव की गतिविधियों में ध्यान देना प्रारम्भ किया। आपके विचार शुरू से ही राष्ट्रवादी और राष्ट्रभक्ती से परिपूर्ण थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से वे सक्रिय सदस्य रहे। सन् 1963 में आप भारतीय जनता पार्टी के नगरपालिका पार्षद बने और गांव के विकास के लिए अथक परिश्रम किया। कांकरोली में गांधी पार्क के निर्माण के लिए भागीरथ प्रयास किये। वे भारतीय जनता पार्टी नगर अध्यक्ष पद पर भी रहे। भारतीय जनता पार्टी के जिला कोषाध्यक्ष पद पर भी आपने सफलतापूर्वक कार्य किया। विश्व हिन्दु परिषद के आप आजीवन सदस्य रहे। आपने मंगल ट्रावेल्स से बसों के संचालन का भी कार्य किया। वे प्राईवेट बस ऑनर्स सोसाइटी के संरक्षक रहे। कमला नेहरू अस्पताल के निर्माण में भी संरक्षक रहे व सुविधाएं जुटाने के लिए प्रयासरत रहे। चौमुखा महादेव मंदिर के जीर्णोद्धार में भी आपकी सक्रिय भूमिका रही। वे मृत्युपर्यन्त तक चौमुखा महादेव मंदिर संरक्षक पद पर रहे। कांकरोली बस स्टेण्ड पर स्थित राठासेण माता के मंदिर का आपने जनता के सहयोग से मंदिर को गिराकर नया भव्य मंदिर बनाने में भी आपका पूरा-पूरा सहयोग रहा। आपने कांकरोली राजसमंद में अग्रवाल समाज का गठन किया और अग्रवाल समाज राजसमंद के संस्थापक व संरक्षक रहे। आपने अपने जीवनकाल में अग्रवाल बन्धुओं के लिए धोईन्दा रोड पर आवासीय कॉलोनी बनाई। आपने अपने जीवनकाल में प्रशासन व समाज की मदद से कई मेडिकल केम्प लगवाए। जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा तो आप लगभग 3 माह तक जेल में भी बंद रहे, पर ज्यों मेरी नजर में सबसे बडा सेवा का काम वे कर गये, वह अनुकरणीय है। वे कांकरोली बस स्टेण्ड पर प्रतिदिन 20-25 लोगों के लिए अपने घर से भोजन बनाकर लाते और साधु सन्यासी एवं जो भी भूखा होता उसे बिठाकर खुद अपने हाथों से परोसकारी कर खिलाते थे।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

इसी दौरान सन् 1956-57 में खमनोर से एक ऐसे महापुरूष का कांकरोली में आगमन हुआ जिसने प्रहलाद जी से जुड़कर दोस्ती और साझेदारी की ऐसी मिसाल कायम की, जिसे याद कर लोग आज भी कह उठते हैं वाह दोस्ती और साझेदारी हो तो ऐसी। खमनोर में श्री गिरधारीलाल जी पालीवाल के घर में सन् 1922 में जन्मे श्री धनेश्वर जी जब अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने हेतु अपने मासाजी नानालाल जी के संरक्षण में आए तो अपना बचपन गुजार जब आजीविका हेतु कांकरोली आए तो इसे संयोग ही कहा जाए या ईश्वर की ईच्छा कि श्री प्रहलाद जी से पहली मुलाकात में ही साझेदारी में धंधा करने की योजना बना डाली। उन्होंने कुम्हारवाडा मीठी कुई के पास लकड़ी की ताल और आरामशीन का कारखाना डाला और उसे सफलतापूर्वक चलाकर अपनी दोस्ती और मजबुत कर ली। फिर उसके बाद तो कांकरोली पुराना बस स्टेण्ड के पास नामदेव मंदिर की खाली पडी जमीन पर आपने साझेदारी में अनाज पीसने की चक्की, चावल साफ करने की मशीन और लकड़ी कारखाना प्रारम्भ कर दिया। जब कांकरोली का विकास आगे बड़ा तो वे अपने कारखाने को कमल तलाई के बाहरी भाग में लेकर चले गए और वहीं अपना कारोबार करते रहे। तब तक बहुत कुछ हो चुका था। प्रहलाद जी एक अच्छे मोटर ऑनर्स और धनेश्वर जी एक अच्छे लकड़ी के कारखाने के मालिक बन कांकरोली में अपनी प्रतिष्ठा बना चुके थे।

धनेश्वर जी एक साफ नियत के हंसमुख इन्सान थे, पूरे गांव में उनके हंसी के ठहाके और मजाक का दौर चलता रहता था। बालकों से उन्हें बहुत ही लगाव था। किसी भी स्कूल में कोई वार्षिकोत्सव होता या टुर्नामेंट होता, तो वे बच्चों के हर कार्यक्रम कों देखने पहुंच जाया करते थे। बच्चों के नाटक, बच्चों के नृत्य एकाभिनय आदि सभी कार्यक्रम बड़े चाव से देखते और बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप ईनाम की घोषणा भी करते थे।

बरसात के दिनों में तो वे खुद कई प्रकार के पकोड़े बनातें और अपने मिलने जुलने वाले यार दोस्तो को बुलाकर खिलाया करते थे। श्री मोहनलाल जी बापना, श्री मांगीलाल जी कोठारी, श्री हेमराज जी, श्री नारायण जी शर्मा, श्री माधुलाल जी डॉक्टर साहब आदि अनेकानेक गांव के सज्जन उस पकोड़ा पार्टी का आनन्द लेते थे। श्री प्रहलाद जी के तीन पुत्र श्री मुन्ना अग्रवाल, श्री विनोद कुमार व श्री राजकुमार और दो पुत्रियां सुधा अग्रवाल व रंजना अग्रवाल इस भरे पूरे परिवार को छोड़ 20 जनवरी 2020 को वे देवलोकगमन कर गए। श्री धनेश्वर जी के कोई औलाद तो नहीं हुई, पर उनके गोद लिए बेटे श्री भूदेव जोशी और उनके परिवार को बिलखता छोड दिनांक 30 दिसम्बर 2017 को वे ईश्वर को प्यारे हो गए। दोस्ती की ऐसी मिसाल कायम करने वाली इन दोनों ही दिवंगत आत्माओं को शत् शत् नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि।

**अफ़जल खां अफ़जल**
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

# कवि माघ और माघ का महीना

शिशिर ऋतु के समापन का महीना है माघ। माघ महीने में शिशिर ऋतु अपना सारा जोर लगाकर थक जाती है और वृद्धावस्था को प्राप्त होकर फागुन के शरण में चली जाती है। माघ में ही बसंत पंचमी की शुरुआत हो जाती है और कुछ दिन बाद माघ के समाप्त होने पर बसंत ऋतु का आगमन होता है। माघ और फागुन महीने का संस्कृत और हिंदी के कवियों ने बड़ा मनोहारी वर्णन किया है। इन्हीं में महाकवि माघ हैं।

महाकवि माघ का जन्म माघ पूर्णिमा को ही हुआ था। इसलिए उनका नाम माघ रखा गया। भक्त कवि रैदास का जन्म भी माघ पूर्णिमा को हुआ था। रैदास ही रविदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। उत्तर प्रदेश राजस्थान हरियाणा और पंजाब में रैदास की शिष्य परंपरा आज भी है। रविदास जयंती के कारण ही 14 जनवरी को पंजाब के चुनाव डालकर 20 जनवरी को कर दिए गए हैं क्योंकि पंजाब से लाखों लोग काशी रैदास को श्रद्धांजलि देने आते हैं।

महाकवि कालिदास एभारवि और डंडी के बाद महाकवि माघ ही ऐसे संस्कृत भाषा के कवि हैं जिनका काव्य लालित्य बेजोड़ है और उन्हें आज तक याद किया जाता है। महाकवि माघ राजा भोज के समकालीन थे। अपने उत्तम काव्य गुण, काव्य शैली, भाषा और पांडित्य के कारण भारत भर के राजा उनका सम्मान करते थे। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने महाकवि माघ का प्रभात वर्णन बड़े सुंदर शब्दों में वर्णित किया है जिसे कई राज्य सरकारों के पाठ्यक्रम में छात्रों को पढ़ाया जाता है। महाकवि माघ के बारे में बहुत जानकारी तो नहीं मिलती पर उनके द्वारा रचित शिशुपाल वध में महाकवि माघ ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया है।

विज्ञानों के अनुसार महाकवि माघ का जन्म सातवीं शताब्दी बताया गया है। सन 660 से लेकर 675 के बीच कभी उनका जन्म हुआ होगा। ऐसा अनुमान है। महाकवि माघ ने लंबी आयु प्राप्त की थी और करीब 120 साल की उम्र के बाद अत्यंत दरिद्रता में गरीबी में उनका देहांत हुआ।

माघ का जन्म राजस्थान के मारवाड़ प्रदेश के आज के भीनमाल में राजा वर्मताल के मंत्री सुप्रभदेव के पुत्र कुमुद पंडित जिन्हें दत्तक भी कहा जाता है के घर वाराही देवी के कोख से हुआ था। माघ मास की पवित्र पूर्णिमा के दिन जन्म होने के कारण बच्चे का नाम माघ रखा गया। माघ के बाबा व पिता श्रीमाली ब्राह्मण थे और संपन्न भी थे। ज्योतिषियों ने गणना करके बताया कि अगर इस बच्चे का नाम माघ रखा गया तो यह श्रेष्ठ विद्वान महाकवि लंबी आयु वाला, धनवान, यशवान बालक होगा। वृद्धावस्था में इसकी मृत्यु दरिद्रता के कारण होगी। इस कारण पिता ने माघ को बहुत संपत्ति दी थी और बहुत सा धन एक घड़े में भरकर जमीन के नीचे घर के अंदर दबा दिया था। पर ज्योतिष गणना के अनुसार महाकवि माघ की मृत्यु दरिद्रता के कारण ही याचकों को दान ना दे पाने के कारण हुई थी। महाकवि माघ के साथ उनकी पत्नी मल्हन जिन्हें विद्यावती भी कहा जाता था, सती हो गई थीं। ऐसा कहा जाता है।

भारत तथा राजस्थान के कई स्थानों पर महाकवि माघ के मंदिर बने हुए हैं। माघ पूर्णिमा को महाकवि माघ का जन्मदिन मनाया जाता है। राजस्थान के पाली, भीनमाल, ओसियां, जालौर आदि स्थानों पर महाकवि माघ के स्मारक और मंदिर बने हुए हैं।

महाकवि माघ का एक ही काव्य ग्रंथ मिलता है शिशुपाल वध जो संस्कृत में है। महाभारत के सभा पर्व में वर्णित शिशुपाल वध की एक छोटी सी घटना को लेकर माघ ने श्री कृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन और उस समय के राजशुय यज्ञ का, रेवातक पर्वत और चेदि नरेश शिशुपाल वध का 20 सर्गों में वर्णन किया है । उपमा, उप मेय, उपमान अलंकार शब्द सौष्ठव, अर्थ और भाव का बहुत सुंदर प्रयोग शिशुपाल वध में किया है। उनके बारे में कहा जाता है कि कालिदास से उपमा अलंकार, भारवि से अर्थ भाव, और महाकवि दंडी से काव्य लालित्य लिया है और इन तीनों कवियों से महाकवि माघ आगे निकल गए हैं।

उपमा कालिदासस्य, भारवे अर्थ गौरवम।
दंडी लालित्यम, माघे त्रयो शंति।।

माघ में तीनों कवियों के गुण एक साथ थे।

महाकवि माघ अपनी योग्यता पांडित्य और काव्य कला के लिए उत्तर भारत के सभी राजाओं द्वारा समादृत थे। कश्मीर नरेश से लेकर राजा भोज तक उनका बहुत आदर करते थे। राजा भोज के दरबार में महाकवि माघ वर्षों तक रहे और दरबारी कवि थे। उज्जैनी के राजाभोज उनका बहुत आदर करते थे। कहते हैं एक बार राजा भोज और महाकवि माघ

जंगल में रास्ता भटक गए और एक बुढ़िया की झोपड़ी पर जा पहुंचे। महाकवि माघ ने बुढ़िया से रास्ता पूछा तो बुढ़िया ने पूछा रास्ता तो कहीं नहीं जाता, आपको कहां जाना है इस पर तो यात्री ही जाते हैं। बुढ़िया ने पुनः पूछा- आप कौन से राहगीर हैं, राहगीर तो दो ही है एक सूरज और एक चांद। कहते हैं अपनी वाकपटुता से बुढ़िया ने महाकवि माघ को निरुत्तर कर दिया तो महाकवि माघ उसके चरणों पर गिर पड़े। बुढ़िया ने कहा महाकवि माघ तुम विद्वान हो पंडित हो कवि हो और अब तुम घमंडी हो गए हो। अपना झूठा घमंड छोड़ दो तो तुम महाकवि से जन कवि भी बन जाओगे। तुम्हारी कीर्ति सदियों तक भारतवर्ष में बनी रहेगी।

कहते हैं वह बुढ़िया कोई और नहीं मां सरस्वती ही थी जो महाकवि माघ का घमंड तोड़ने के लिए परीक्षा लेने आई थी महाकवि माघ ने अपने जीवन में अपनी काव्य कला पांडित्य, विद्वता से बहुत धन अर्जित किया था। महाकवि माघ बहुत दानी थे। दीन दुखियों और गरीबों को दिल खोलकर दान देते थे। उनके दरवाजे पर आया याचक कभी खाली हाथ नहीं लौटता था।

कहते हैं वृद्धावस्था में महाकवि माघ अत्यंत दरिद्र हो गए। उनके पास गरीबों को याचकों को देने लायक धन नहीं रहा तो उन्होंने अपनी पत्नी विद्यावती को राजा के दरबार में भेजा। विद्यावती महाकवि माघ का एक पत्र लेकर राजा के दरबार में गईं जिसे पढ़कर राजा ने उन्हें बहुत सा धन प्रदान किया। राज दरबार से अपने घर आते हुए महाकवि माघ की पत्नी ने रास्ते में मिले याचको को सारा धन दान में दे दिया। उधर महाकवि माघ के दरवाजे पर कई याचक बैठे थे। महा कवि माघ ने पत्नी से पूछा की राजा के द्वारा दिया गया धन कहां पर है तो पत्नी ने सारा धन गरीबों में याचकों में बांट देने की बात बताई। इस पर माघ रो पड़े और बोले कि घर के बाहर बैठे याचको को अब मैं क्या मुख दिखाऊंगा।

महाकवि माघ 120 वर्षों तक जीवित रहे और उनके अंतिम दिन बहुत गरीबी में बीते । दरिद्रता के चलते ही उनकी मृत्यु हो गई। उनकी पत्नी उनके साथ ही सती हो गई।

महाकवि माघ भले ही आज दुनिया में नहीं है पर उनकी कीर्ति आज भी मौजूद है। उनका एक ही काव्य ग्रंथ शिशुपाल वध मिलता है जो संस्कृत काव्य ग्रंथों में बेजोड़ है। 20 सर्गों के इस महाकाव्य में बहुत सुंदर उपमा यें अलंकार, शब्द विन्यास पाए जाते हैं। ग्रंथ को पढ़ने के बाद हमें पता चलता है कि सारी उपमाएं, अलंकार, भाव और अर्थ इसमें समाहित हैं। आज नई पीढ़ी महाकवि माघ, कालिदास, भारवि, दंडी को भूलती जा रही है।

**शिवचरण चौहान**
मनेथू, सरवन खेड़ा
कानपुर देहात
मो. 9369766563

# सवाल

जूतों में बंटती दाल है
अब तो ऐसा हाल है
मर गए लोग भूख से
सड़ा गोदामों में माल है।

बारिश के बस आंकड़े
सूखा हर इक ताल है
लोकतंत्र की बन रही
नित नई मिसाल है।

भाषणों से पेट भरते
उम्मीद की बुझी मशाल है
मंत्री के जो मन भाए
वो बकरा हलाल है।

कालिख उनके चेहरे की
कहलाती गुलाल है
जनता की धोती छोटी है
बड़ा सरकारी रुमाल है।

झूठ सिंहासन पर बैठा
सच खड़ा फटेहाल है
जो न हल होगा कभी
गरीबी ऐसा सवाल है।

घोटालों का देश है
मत कहो कंगाल है
सब जहां बेदर्द हैं
बस वही अस्पताल है।

कल जहां था पर्वत
आज इक पाताल है
देश में हर कबाड़ी
हो चुका मालामाल है।

बबूल बो कर खाते आम
हो रहा कमाल है
शीशे के घर वाला
रहा पत्थर उछाल है।

चोर काम कर रहे
पुलिस की हड़ताल है
हास्य व्यंग्य हो गया
दर्द से बेहाल है।

जीने का तो कभी
मरने का सवाल है।

ढूंढता जवाब अपने
खो गया सवाल है।

**डॉ. लोक सेतिया**
मॉडल टाउन कमर्शियल एरिया
फतेहाबाद - हरियाणा
9416792330

# समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. हाल ही में जो देश विश्व में खीरे का सबसे बड़ा निर्यातक देश बन गया है?
2. आईसीसी की तरफ से साल 2021 की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर जिसे चुना गया है ?
3. केंद्र सरकार ने इंडिया गेट से अमर जवान ज्योति को स्थानांतरित करके वहां जिसकी प्रतिमा स्थापित की जाएगी?
4. कोलकाता में नए पूर्वी सेना कमान के प्रमुख के रूप में जिसे नियुक्त किया गया है ?
5. मॉरीशस सरकार ने मेट्रो एक्सप्रेस परियोजना में भारत के समर्थन को लेकर एक स्टेशन का नाम जिसके नाम पर रखने की घोषणा की है ?
6. वह देश जिसने भारत के साथ ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने का 2780 करोड़ रूपए का समझौता किया है?
7. दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट क्रिकेट में शतक लगाने वाले पहले भारतीय विकेटकी पर बल्लेबाज जो बन गए हैं ?
8. हाल ही में भारतीय रेलवे ने यात्रियों के खोए हुए सामान को ट्रैक करने के लिए जिस मिशन को लॉन्च किया है?
9. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नए चीफ के रूप में जिसे नियुक्त किया गया है ?
10. यूनेस्को ने भारतीय धरोहरों का विवरण जिस भाषा में छापने की सहमति दे दी है ?
11. आईपीएल के टाइटल स्पॉन्सरशिप के लिए अगले दो वर्ष के लिए जिस कंपनी ने समझौता किया है?
12. जिस राज्य सरकार ने घड़ियाल के संरक्षण के लिए ओरंग राष्ट्रीय उद्यान को उसके मौजूदा आकार से तीन गुना अधिक विस्तृत करने हेतु एक प्रारंभिक अधिसूचना जारी की है?
13. दक्षिण ध्रुव पर अकेले पहुंचने वाली पहली अश्वेत महिला जो बन गई हैं?
14. वर्ष 2021 के लिए जिसे हिंदी भाषा का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया है?
15. हाल ही में जिस देश ने अंडर-19 एशिया कप क्रिकेट का खिताब जीत लिया है, वह है ?

**उत्तरमाला**

1. भारत
2. स्मृति मंधाना
3. सुभाष चंद्र बोस
4. लेफ्टिनेंट जनरल आरपी कलिता
5. महात्मा गांधी
6. फिलीपींस
7. ऋषभ पंत
8. मिशन अमानत
9. एस. सोमनाथ
10. हिंदी
11. टाटा ग्रुप
12. असम
13. प्रीत चांडी
14. दया प्रकाश सिन्हा
15. भारत

# शिक्षा एवं साहित्य में उल्लेखनीय योगदान पर डॉ. गौड़ का सम्मान

**राजसमंद** शहर में भवानी नगर कांकरोली के लेखक व प्रोफेसर डॉ. संजय गौड़ का शिक्षा एवं साहित्य जगत में उल्लेखनीय योगदान के लिए गणतंत्र दिवस पर भाजपा राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य व पूर्व मंत्री डॉ. अरुण चतुर्वेदी, भारतीय सेना अधिकारियों तथा खातीपुरा व्यापार मंडल जयपुर के पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। गौरतलब है कि डॉ. गौड़ 9 पुस्तकें, 100 से अधिक शोध पत्र, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में दिए व्याख्यान, साहित्य जगत में लेखन एवं काव्य पाठ कर चुके हैं। हाल ही में एक कविता पर प्रधानमंत्री कार्यालय से भी प्रशंसा पत्र मिला।

# महकते फूल चहकते पंछी
## बाल साहित्य का अभिनव प्रयोग

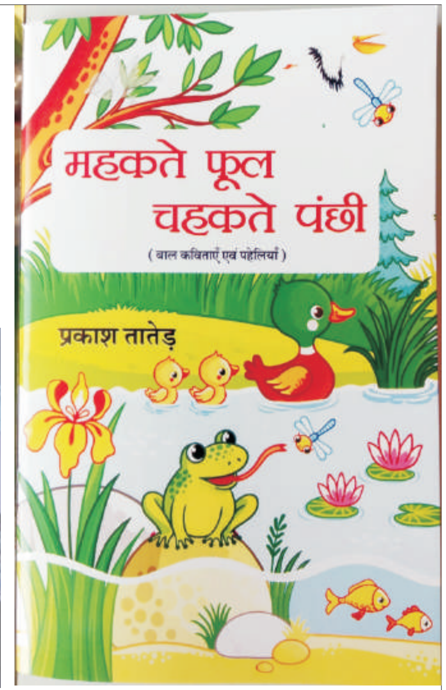


'महकते फूल चहकते पंछी' श्री प्रकाश तातेड़ की सद्यः प्रकाशित पुस्तक है जो बाल साहित्य के क्षेत्र में एक अभिनव एवं अनूठा प्रयोग है, यह पुस्तक 32 पहेलियों एवं 38 कविताओं का संकलन है। इससे पूर्व उनके द्वारा रचित सभी पुस्तकें पहेलियों पर ही केंद्रित रही हैं। कविता के साथ-साथ पहेलियों का संयोजन उनका नवीनतम प्रयास है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पहेलियां बाल पाठकों को बहुत आकर्षित करती हैं। पहेलियों को सही-सही बूझना हर बच्चे के लिये चुनौती बन जाता है। ये न केवल कौतूहल जगाती हैं वरन मन में जिज्ञासा भी जगाती हैं। पहेलियों को सही-सही बूझ लेने पर अतुलनीय आनन्द की प्राप्ति भी होती है। शायद इसीलिये किसी भी पत्र-पत्रिका में पहेलियों का नियमित स्तम्भ बच्चों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र होता है।

स्वयं श्री तातेड़ के अनुसार उक्त पहेलियों की रचना उनके द्वारा बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' का सम्पादन कार्य वर्ष 2018 में स्वीकार करने के उपरान्त की गई हैं, और इस निमित्त उनके द्वारा पत्रिका में एक नियमित स्तम्भ भी प्रारम्भ किया गया। इस पुस्तक में संकलित पहेलियों में पर्याप्त विविधता है। ये पहेलियां बाल पाठकों के मस्तिष्क को और अधिक उर्वर बनाने एवं उन्हें जिज्ञासु बनाने की दिशा में अवश्य ही सहायक सिद्ध होंगी। पहेली की परम्परा को सशक्त बनाने तथा इसे नियमित रूप में बच्चों तक पहुंचाने हेतु श्री तातेड़ द्वारा किया गया प्रयास श्लाघनीय है।

पुस्तक के रचयिता द्वारा शीर्षक का औचित्य बताते हुए लिखा है 'महकते फूल चहकते' पंछी अच्छे लगते हैं, सचमुच बाल्यावस्था में प्रकृति के विभिन्न रंग बाल मन को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। बच्चों की इसी सोच को दृष्टिगत रखते हुए कवि ने अपनी रचनाओं में सर्वाधिक स्थान प्रकृति से जुड़े हुए विषयों को दिया है। उनकी कविताऐं 'मेरा पौधा, मेरा बगीचा, कुदरत का करिश्मा, श्चमकीले तारे, लहराता सागर, बादल जी, सूरज और चाँद, तितली, मनीप्लान्ट, फ्लेमिंगो, व आम, जामुन ले लो, तत्क्रम में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहां यह कहना प्रासंगिक होगा कि मनीप्लान्ट का पौधा अपनी सुन्दरता के कारण घर-घर में लगाया जाता है, यद्यपि यह पौधा भारतीय मूल का नहीं है। इसी प्रकार फ्लेमिंगो भी प्रवासी पक्षी है जो अपने

सुन्दर रंग-विन्यास के कारण आकर्षण का केन्द्र रहता है। इन दोनों पर कविताऐं लिखना कवि की व्यापक दृष्टि और सौन्दर्यबोध का परिचायक है। इसके अतिरिक्त कवि ने राष्ट्रीय भावना, पर्व एवं त्योहार, सामाजिक सम्बन्ध, मौसम, तथा साइकिल व गुब्बारे जैसी बच्चों के लिये मनभावन वस्तुओं पर भी अपनी कलम चलाई है।

सामान्य धारणा के अनुसार बच्चों को गेय कविताऐं अधिक आकर्षित करती हैं। इस दृष्टि से उनके द्वारा रचित 'मेरी विनती, एकता, हम गुब्बारे, लहराता सागर, व बादल जी, जैसी कविताऐं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कवि द्वारा अपनी कविताओं में कतिपय नये प्रयोग भी किये गये हैं। उनकी एक कविता 'बादल जी' में कविता की प्रत्येक पंक्ति के अन्त में 'जी' शब्द का प्रयोग किया गया है जो निः सन्देह कविता को और अधिक आकर्षक बनाता है। इसी प्रकार एक अन्य कविता 'लहराता सागर' की ये पंक्तियां 'दुनिया की सारी नदियों को अपनी गोद सुलाता सागर' बहुत सुन्दर बन पड़ी है जिनमें सागर का ममत्व भाव स्पष्ट रूप से निखर के आता है। नदियों के सागर में मिलने की सामान्य सी लगने वाली नैसर्गिक प्रक्रिया को कवि ने अपनी उत्कृष्ट संवेदनशीलता के माध्यम से एक नयी दृष्टि प्रदान की है। इस कविता में कवि आगे कहता है रेत-ढेर में खेलें बच्चे,देख-देख हर्षाता सागर, जो एक बार फिर से सागर की ममतामयी अन्तर्दृष्टि की प्रखर अभिव्यंजना है। इसी प्रकार एक अन्य कविता 'जामुन ले लो' में बच्चों की एक बालसुलभ क्रिया को कवि ने अपने शब्दों

के माध्यम से जीवन्त किया है। प्रायः यह देखा जाता है कि बच्चे जामुन खाने के पश्चात एक-दूसरे को जीभ चिढ़ाते हैं जो जामुन के प्रभाव से नीली हो जाती है। कवि ने इस सामान्य लगने वाली क्रिया को अत्यन्त सहज एवं सरल ढंग से शब्दों में पिरोया है जो इस प्रकार है 'जय ने धोकर जामुन खाये, सबको नीली जीभ दिखाये'। शब्द-युग्म कविता को लयात्मकता प्रदान करते हैं। अपनी एक कविता एकता में कवि ने इनका सुन्दर प्रयोग किया है। इन शब्द-युग्मों यथा 'बूंद-बूंद, पेड़-पेड़, दीप-दीप, कण-कण, चुन-चुन' के प्रयोग से कविता जहां एक ओर लयात्मकता में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर कविता के सौन्दर्य में भी निखार आया है।

कवि ने इन कविताओं में अपनी वैज्ञानिक एवं तार्किक सोच का भी परिचय दिया है। 'प्यारी परियां' कविता में वह बच्चों को समझाते हैं कि परियां 'सत्य' में नहीं होती हैं बल्कि कवि या लेखक अपनी रचनाओं में उनका सजीव चित्रण करते हैं जो बच्चों को बहुत लुभाती हैं। इसी प्रकार, वर्तमान समय की सबसे खतरनाक बीमारी, कोरोना जो वायरसजन्य है, को केन्द्रित करते हुए उनकी दो कविताऐं, 'पहनो मास्क व बच्चों की पुकार' उनकी इसी सोच का परिचायक है। कोरोना से बचने का प्रभावी उपाय मास्क पहनना है जो विज्ञानसंगत है। चिकित्सकों द्वारा भी इसे शीर्ष प्राथमिकता प्रदान की जाती है।

कुल मिलाकर सभी कविताऐं कवि के व्यापक फलक को प्रतिबिम्बित करती हैं। कविता सहज एवं सरल भाषा में रची गई हैं जो बच्चों को निःसन्देह आकर्षित करेंगी। पुस्तक में संगृहीत पहेलियां भी बच्चों के लिये किसी खज़ाने से कम नहीं हैं जो उन्हें अपनी जिज्ञासा शान्त करने व बुद्धि के विकास की दिशा में अवश्य ही लाभकारी सिद्ध होंगी। कवि से भविष्य में भी इस प्रकार की बालोपयोगी पुस्तकों की अपेक्षा रहेगी।

**राकेश चंद्रा**
**लखनऊ**

# नाथद्वारा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट का खेल सप्ताह

राजसमंद जिले में नाथद्वारा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट में खेल सप्ताह के तहत विविध प्रतियोगिताएं हुई। विजेताओं को समारोह पूर्वक पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शिव कुमार व्यास थे, जबकि विशिष्ट अतिथि राउमावि नाथद्वारा के प्राचार्य ललित कोठारी थे। कोठारी खूब खेलो खूब पढ़ो और आगे बढो की नीति की सीख दी।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि व्यास ने युवा अपनी ऊर्जा को सकारात्मकता की ओर ले जाने की शिक्षा देते हुए कहा कि मन से हार नहीं मानने वाला ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। प्रबंध निदेशक दीपेश पारीख ने कहा कि खेलकूद जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए, जिससे शारीरिक विकास हो सकें।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. रंजना शर्मा ने खेल के माध्यम से बच्चों में कौशल विकास पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन बीएससी बीएड की हित्विका शर्मा ने किया। खेल प्रभारी बृजराज सिंह राणावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आईटीआई प्राचार्य डॉ. पंकज राठी, लॉ कॉलेज प्राचार्य डॉ. हरीश कुमार, पीआरओ धर्मेश पालीवाल, एकेडमिक हेड लोकेन्द्र कुमावत आदि मौजूद थे।

## लॉ द्वितीय वर्ष परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत

नाथद्वारा लॉ कॉलेज के द्वितीय वर्ष का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। पीआरओ धर्मेश पालीवाल ने बताया कि मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के घोषित परिणाम में मोनिका पालीवाल ने 70.22 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम, हेतल डागलिया ने 70 प्रतिशत अंक से द्वितीय व नीतू शर्मा 68.56 प्रतिशत से तृतीय रही। निदेशक दीपेश पारीख प्राचार्या डॉ रचना चौधरी ने शुभकामनाएं दी।

# रूह मिलन की ऋतु : वसंत

वासंती वैभव की छटा है निराली।
चारों दिशाओं में बहार है आई।
मुरझा, चेहरों पर मुस्कान है छाई।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
ऋतुओं में वसंत ऋतु है मस्तानी।
प्रेमियों को यह ऋतु है बड़ी प्यारी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
दोनों प्रहर की समा है रूहानी।
प्रकृति खिली आज है मनोहारी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
धरती ने ओढ़ी चुनरी है हरियाली।
पेड़ और पौधों ने ली है अंगड़ाई।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
अरुणोदय की लालिमा है बड़ी न्यारी।
पंछियों की आवाजें लगती है सुहानी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
खिल उठी वृक्षों की हर एक है डाली।
रंग बिरंगी फूलों की कलियां है मुस्काई।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
कृष्ण संग राधा ने अखियां है मिलाई।
फूलों के झूले पर प्रणय क्रिडा है रचाई।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
खुद को भूलकर राधा हुई है दीवानी।
मैं कृष्ण हूं यह बोल उठी है राधा रानी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
खुद को आज भूल गए है गिरधारी।
मैं राधा हूं यह बोल उठे हैं मुरारी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
कृष्ण-कृष्ण बोलकर राधा हुई कृष्णमयी।
राधे- राधे बोलकर कृष्ण हुए राधामयी।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
दो तन एक प्राण हुए हैं पल माही।
आत्मा परमात्मा की मिलन घड़ी है आई।

वासंती वैभव की छटा है निराली।
आत्मानंद परमानंद की बेला है आई।
मुक्तानंद ब्रह्मानंद की बेला है आई।

**समीर उपाध्याय**
मनहर पार्क, चोटीला,
सुरेंद्रनगर (गुजरात)
9265717398

# सत्य कभी पराजित नहीं होता

सच को सच कहने का, हम मन में ठान लें,
मात व पिता का कहना, यदि हम मान लें।
अपने कर्म में हम, यदि जुनून से जुट जाएं,
हमें कोई हरा नहीं सकता, निश्चित जान लें।।

कभी हम डर कर झूठ को, सच कह देते हैं,
अन्याय व अत्याचार को, सहन कर लेते हैं।
डट कर मुकाबले से, हमें भय लगने लगता,
फिर जीवन को हम, घुट घुट कर जी लेते हैं।।

एक बार तो मरना ही हैं, तो कैसा हमें डर,
शोषण के विरुद्ध खड़े हो, बने बस! निडर।
सत्य के साथ रहें तो, अवश्य मिलेगी जीत,
दृढ़ संकल्प से करें विरोध, कितना हो कहर।।

सत्य कभी पराजित न होता, हम करें विश्वास,
जीवन में मिलेगी सफलता, मन में रखें आस।
सत्पथ में मुश्किलें भी अक्सर आती ही रहेंगी,
एक बार पराजित होने पर, न होना हमें निराश।।

पूर्ण समर्पण और शक्ति से, फिर हम करें वार,
सत्य को हम अपनी ताकत बनाए कर दें प्रहार।
कभी अकेला होकर भी, हमें करना होगा युद्ध,
हम जीत कर दिखाएंगे, हारेंगे भले कई बार।।

**देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव**
कैतहा, भवानीपुर, बस्ती
उत्तरप्रदेश, 7355309428

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

# मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती..........................................................................................................................

पता ................................................................................................... राज्य ..........................................

फोन (निवास) ........................................मोबाइल ........................................ई-मेल ..................................................

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ..........................का डी.डी या चैक नं. ..........................................................

तिथि ............................................ प्राप्त करें।

बैंक का नाम ...................................................................................................

**( राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)**

| अवधि | अंकों की संख्या | कवर मूल्य | बचत | सब्सक्रिशन दर |
|---|---|---|---|---|
| 1 वर्ष | 12 | 240 | 40 | 200 रुपए |
| 3 वर्ष | 36 | 720 | 220 | 500 रुपए |

**जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत**

**कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,**
**कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,**
**जिला-राजसमंद ( राजस्थान ) मोबाईल 9414239648, 9950084705**

**नियम और शर्ते :**

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

# छातीकूटिए अमर रहें

दुनिया की आबादी का काफी हिस्सा औरों के सुख से दुःखी तथा औरों के दुःख से सुखी रहने वाले लोगों से भरा पड़ा है। भगवान का दिया हुआ इनके पास सब कुछ है, कहीं किसी चीज की कोई कमी नहीं है फिर भी दुःखी हैं, हमेशा अपने दुःखों, पीड़ाओं और अनमनेपन का जिक्र करते हुए मानवीय संवेदनाओं से भरे व्यक्तित्व का अहसास कराते रहते हैं। भगवान ने जो दिया है, उसके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने की बजाय और अधिक पाने की तीव्र लालसा इतनी अधिक है कि प्राप्त का भोग भी नहीं कर पा रहे हैं और अप्राप्त की चिन्ता में दुबले हुए जा रहे हैं। इस किस्म में दो तरह के लोग आते हैं। छाती कूटते रहने वाले और रोना रोने वाले। इन लोगों की बातों को सुनकर, भाव-भंगिमाओं को देखकर ही रोना आता है। तरस भी आता है कि भगवान ने जैसे लोगों को बहुत कुछ क्यों दे डाला है जिन्हें प्रसन्नता के साथ भोगना और उपयोग करना तक नहीं आता। गरीबों की अपेक्षा सम्पन्न और तमाम प्रकार के वैभवशाली अभिजात्य वर्ग के नर-नारियों में यह महामारी अधिक देखी जा रही है।

सब कुछ होते हुए भी हमेशा असन्तुष्ट रहना इनके स्वभाव का सबसे बड़ा लक्षण हो गया है। कोई अच्छा काम भी करेंगे तो चाहेंगे कि उसे वाहवाही मिले, लोग सराहें और इसकी एवज में कोई न कोई पुरस्कार, सम्मान या अभिनंदन तो प्राप्त हो ही जाए। और जब सराहना या सम्मान नहीं मिल पाता तो सारा उत्साह और उमंग धड़ाम। जितना आनंद कर्म की सफलता से प्राप्त हुआ होता है उससे कई गुना अवसाद में डूब जाते हैं। कई-कई दिनों तक इसी अवसाद में फंसे रहा करते हैं।

आज अगर छाती कूटने वालों की गणना शुरू हो जाए तो सभी जगह बहुत से लोग मिल जाएंगे जो बिना किसी कारण के छाती पीटते रहने के सिवा कुछ नहीं करते। इनके छाती पीटने के पीछे के कारणों को तलाशा जाए तो इनकी जिन्दगी से जुड़ा एक भी उचित कारण जैसा नहीं मिलेगा जिसकी वजह से इन्हें छाती कूटनी पड़े। दूसरों के सुखों, तरक्की और शुचिता को देखकर ये छाती कूटते रहते हैं। हर स्थान पर इन्हीं की तरह के दूसरे लोगों की भरमार है। छाती कूटने वालों में किसी प्रकार का कोई लिंगभेद नहीं है नर-नारी या उभयलिंगी सब शमिल हैं इनमें।

समान किस्म के ये आत्मक्लेशी और सदा दुःखी लोग किसी न किसी मोड़ पर मिल कर अपने छोट-छोटे समूह बना लिया करते हैं और इन समूहों को तब तक आनंद नहीं आता है जब तक कि ये किसी न किसी बाहरी विषय या दूसरों के बारे में सोच-सोच कर छाती न पिटने लगें।

छाती कूटिया समूहों को भले ही अपने लिए कुछ भी हासिल न हो पाए, लेकिन इनके हीमोग्लोबिन कमी, शुगर, ब्लड़ प्रेशर, थॉयराइड, गठिया और दिमागी संतुलन को ठीक-ठाक रखने के लिए छाती पीटना ठीक उसी तरह जरूरी होता है जिस तरह सूअरों को थूथन रगड़कर कचरे और गंदगी के ढेर या कि गन्दे नाले से अपनी मनपसंद दुर्गन्ध की तलाशी, या फिर चूहों के लिए निरन्तर दांत घिसने की मजबूरी अथवा झींगुरों को हर क्षण गूंजायमान रहकर नीरवता और शांति भंग की विवशता।

आने वाले समय में लगता है छाती कूटिया सम्प्रदाय या छाती कूट जाति का प्रादुर्भाव जरूर होगा ही, जिसके हर कर्म में छाती कूटने की विवशता बनी रहेगी। इसके मठाधीश की तलाश इन लोगों को अभी से आरंभ कर देनी चाहिए। जिन परिसरों में एकाध ही छातीकूटिया पैदा हो जाए, वहां तो मरघट जैसी स्थिति अपने आप पैदा हो ही जाती है। जैसे परिसरों में इनके पास मिलने आने वाले लोग भी इन्हीं की तरह होते हैं। इन सभी को देख लगता है कि किसी के मरने पर ये सारे तीये की बैठक में ही आते रहने वाले हों।

छाती पीट-पीट कर अपने हृदय को मजबूत और निष्ठुर बनाने वाले सभी लोग धन्य हैं जिनकी वजह से शोक संवेदनाओं और रुदालियों का वजूद बना हुआ है। लगता है विधाता ने इन लोगों को केवल छाती पीटने के लिए ही धरती पर भेजा हुआ है। छाती कूटने वालों की कई किस्में हैं। बिना किसी बात के छाती कूटने वाले भी हैं और दूसरों से छाती पिटवाने वाले भी। यही सब चलता रहा तो आने वाले दिनों में सीने की तरह फौलादी व्यक्तित्व का पैमाना भी बदल कर छाती की मजबूती होकर रह जाएगा। इसके लिए किसी को रोके नहीं, जो छाती कूटने वाले हैं उन्हें जी भर कर छाती कूटने दें। ये लोग छाती कूटना बन्द कर देंगे तो हो सकता है कि अपने हाथों में पत्थर ही थाम लें, कुछ और कर बैठें।

छातीकूटियो को देखें, उनकी छाती कूटन कला और इसके साथ निकलने वाली सांगीतिक तरंगों का भरपूर आनंद लें, मुफतिया मनोरंजन का अपना अलग ही आनंद है, इस बात को ध्यान में रखें। अपना क्या जाता है, जो मिला सो मनोरंजन, जो दिखा सो भाग्य का।

सौ बात की एक बात- इनको कूटने दें छाती, रोने दें जी भर कर। अन्यथा इस प्रजाति के कुपोषित होकर लुप्त हो जाने का खतरा भी आने वाली सदियों में सामने आ सकता है।

**डॉ. दीपक आचार्य**
**वरिष्ठ साहित्यकार, बांसवाड़ा**
**9413306077**

# स्कूल

बड़ों के लिए मायने नहीं रखता होगा, एक व्यक्ति के लिए उसके बचपन का स्कूल मायने रखता है। अनेक यादें संजोए उस स्कूल की दीवारें जब जमींदोज होती हैं, तब दिल की गहराइयों से जो हूक और आंखों से जो आंसू गिरते हैं, उसे समझना बमुश्किल होता है। कितना अच्छा हो, स्कूल की इमारतें, वे नयी हों या पुरानी, नहीं टूटनी चाहियें क्योंकि तब दीवारें नहीं टूटतीं,दिल टूटते हैं। कैसे? चलिये? देखते हैं।

मेरे बचपन का स्कूल आज बड़ी निर्दयता के साथ गिराया जा रहा था। जेसीबी तेजी से आती,दीवार से टकराती और दीवार भरभराकर गिर जाती। एक दो तीन चार और भी अंदर कमरों की दीवारें गिरती रहीं और मैं सड़क के किनारे बरसों से किराये पर चलते स्कूल को मरते हुए देखता रहा।

वह मेरे बचपन का साथी था। स्कूल की दीवारें जिन पर अक्सर हम बच्चे अपनी अपनी कल्पनाओं के चित्र अपने हाथ की पेंसिलों, चाक स्टिकों से उकेरते थे, गुरुजी से इस कारण मार भी खाते थे। लेकिन बावजूद मास्टरजी की सजा के, दीवारें हमें जैसे माफकर देती थीं। वे हमें अपना मानती थीं, हम उन्हें अपना। यह अपनापन ही आज मानों जेसीबी की टक्कर से लहुलुहान होती, चीत्कार मारती दीवारों को देखकर मुझे सिवाय आंसू बहाने के और कुछ नहीं कर पाने का कष्ट दे रही थीं।

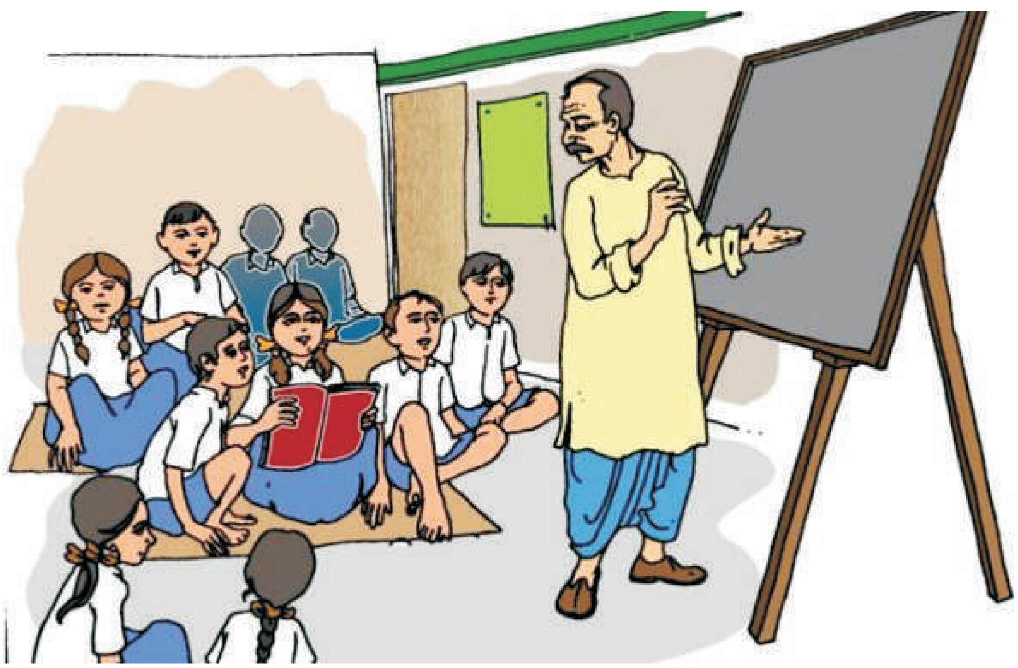

उस रात मैं सो नहीं पा रहा था। सपने आते,स्कूल मुझे बुलाती और मेरी नींद खुल जाती।

मुझे याद आया, इस स्कूल में मेरे एडमीशन का पहला दिन। आज मुझे स्कूल ले जाने के लिये तैयार किया जा रहा था। मेरी किताबें,किताबों से आती खुश्बू,कलम और स्याही की दवात। हां, एक स्लेट और खड़िया भी जिससे मुझे आज से सुनना, फिर समझना, फिर पढ़ना और फिर लिखना शुरू करना था।

घर की छत से रोज स्कूल जाते बच्चों को देखता था। यूनिफार्म,बेग और किसी चेहरे पर हंसी तो किसी पर परेशानी। शायद घर छूटने का दर्द। मैंने तय कर रखा था, मैं नहीं घबराऊंगा, न रोऊंगा, न हीं स्कूल न जाने के लिये तूफान खड़ा कर दूंगा।

लेकिन आज न चाहते हुए भी वही सब कुछ दोहरा रहा था। अब जल्दी उठना पड़ेगा,नहाना पड़ेगा, यूनिफार्म पहन और हाथ में रोटी सब्जी का डिब्बा लिये समय पर स्कूल जाना पड़ेगा। सुना है, वहां गेट से बाहर निकलने की मनाही है। टाट पट्टी,स्टूल-टेबुल या जमीन पर भी जो भी मिले बैठकर पढ़ना होता है। न पढ़े तो सटाक,न लिखे तो सटाक,न सुने तो सटाक, थोड़ी सी भी गड़बड़ तो सटाक। देह थर्रा गयी थी उस दिन। नहीं जाना स्कूल। मां से लिपट कर विनती की तो मां ने पिताजी की ओर इशारा कर दिया।

पिताजी ! वे तो नहीं सुनने को ही नहीं तैयार थे। उम्र हो गयी।अब तो जाना ही होगा।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
मेवाड़ी जयवर्द्धन

छोटा भैया के यह सीन देखकर देवता पहले ही कूच कर रहे थे। पिताजी का साफ  कहना था, वह भी जायेगा अगले साल।तू अभी चल।

आज हंसी आ रही थी लेकिन उस दिन तो सचमुच हालत खराब थी। मां ने आंख में आये आंसू छुपाने के लिये मुंह फेर लिया था। बड़ी बहिन तो मस्ती के साथ अपने स्कूल जाने की तैयारी में थी। उसका भी यही कहना था,भैया स्कूल तो जाना ही होगा नहीं तो आगे चलकर पत्थर उठाना पड़ेगा सर पर। और छोटा भैया उसकी तो सिट्टी पिट्टी पहले से ही गुम थी।

याद आता है, उस दिन मैं रो रहा था, चिल्ला रहा था।आज नहीं जाऊंगा, कल स्कूल जरूर जाऊंगा। लेकिन पिताजी भला क्यों सुनते? रोज रोज बहाने सुन रहे थे। आज तय कर लिया, मैं स्कूल जाऊंगा ही।

स्कूल की राह। बच्चे वही सब देख देख कर हंस रहे थे जिससे वे गुजर चुके थे। अचानक पीछे से किसी ने पिताजी को आवाज़ दी। पिताजी ने देखा, अरे ! ये तो स्कूल के सबसे कठोर,अनुशासन प्रिय और योग्य,अनुभवी टीचर हैं।

गुरूजी के जीवन में ऐसे खूब शिष्य आये थे। पिताजी कुछ कहें उससे पहले वे बोल, इसे मुझे दें आप निश्चिंत घर जायें।

पिताजी लौट पड़े। मेरी बोलती बंद। गुरूजी ने मेरा हाथ थाम लिया। उस हाथ का कुछ कोमल, कुछ कठोर स्पर्श। मैं समझ नहीं पाया।

स्कूल पहुंच मुझे एक कक्षा में मेरी ही उम्र के बच्चों के बीच मुझे बैठा दिया। वे एक एक का नाम बोल रहे थे। सबसे बाद में मेरा नाम बोला।

आज हमने कुछ नहीं पढ़ा। बस,हम बाहर मैदान में दौड़े, बोल से खेले और फिर कक्षा में लौट कर अन्त्याक्षरी करायी। बीच बीच में गुरूजी के हाथ का कोमल स्पर्श कभी मेरी पीठ तो कभी मेरे सिर पर होता।

मुझे कुछ कुछ अच्छा लगने लगा। गुरूजी ने पूछा,अब इंटरवल होगा। सब अपने साथ लाया खाना खायेंगे। सब बच्चे खिलखिला कर हंस पड़े। मैं भी अनायास ही हंस पड़ा। भूख तो सचमुच लगी है।

खाना खाते समय मां का चेहरा याद आ गया। पिताजी याद आये। लेकिन अभी घर जाने की जल्दी नहीं थी।

अभी तो किताब निकालनी है बस्ते से। हिन्दी की किताब। वह पहला पाठ था-मां।किताब में बनी हुई मां में मुझे मेरी मां याद आने लगी। अब तो घर याद आ रहा है।

लेकिन सुबह से अब तक जो गुरुजी साथ साथ हैं,वे भी मां

जैसे ही लग रहे हैं। चलो, पूछते हैं, घर कब चलेंगे?

सवेरे जिन गुरूजी से डर लग रहा था,अब उनकी बाहें पकड़ जानना चाह रहा था,घर कब चलेंगे?

आज मालूम है कि उस समय स्कूल की पूरी छुट्टी नहीं हुई थी। लेकिन उस दिन मेरी मां जैसे गुरूजी ने बड़ी कक्षा के भैया की अंगुलियों में मेरी अंगुलियां थमाकर कहा था, घर पहुंचाकर आ जाओ जल्दी से।

घर में मां, पिताजी,बहिना और छोटा भैया बड़ी उत्सुकता से मेरी राह देख रहे थे। मां ने लपक कर मुझे गोद में उठा लिया। पिताजी ने पीठ थपथपाई,कैसी लगी स्कूल?

मैं उछल पड़ा,पापा ! कल भी जाऊंगा स्कूल। बहिन और छोटा भैया मेरे साथ नाच पड़े......

अचानक मुझे ध्यान आया,आज स्कूल याद क्यों आ रहा है? मुझे लगा, क्यों न याद आये? जिस स्कूल के साथ मेरी अमिट यादें जुड़ी हैं,आज वह गिराया गया और मैं देखता रहा। कुछ न कर सका।

प्रस्तोता :

**डॉ. राकेश तैलंग**
**कांकरोली, राजसमन्द**

खास खबर

# नगर की प्रतिभावान बेटी- डॉ. रचना तैलंग जिला नोडल प्राचार्य पद से हो रही है सेवानिवृत

राजसमंद की समृद्ध शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं समग्रता मे ं जनाकांक्षा आधारित समाज सेवा की एक उत्कृष्ट परंपरा रही है। इस विद्यानुरागी परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने और उसे व्यक्तिगत क्षमताओं के ईश्वरीय प्रदाय के सन्दर्भ में सामयिक मौलिक स्वरूप देने में डॉ. रचना तैलंग की भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता। सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजसमंद के प्राचार्य पद से छत्तीस वर्ष की राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त होकर सामाजिक जीवन में स्वयं को सम्पृक्त बनाने की अपनी जिजीविषा को फलित करने वाली डॉ. रचना जी कांकरोली- राजसमंद की उन कतिपय बेटियों में से एक हैं जो अपनी अनन्य शैक्षिक देन के कारण सदैव समाज में सम्मान पाती रही हैं।

यह कहना अत्युक्ति न होगी कि वे एक ऐसी विद्यावान बेटी हैं जो गत शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सन् 1986 में समाजशास्त्र के व्याख्याता के रूप में राजकीय महाविद्यालय, करौली में नियुक्त हो निर्बाध सेवाएं देती हुई सन् 2019 से एस. आर. के. महाविद्यालय में ही प्राचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देती रहीं और इसी महाविद्यालय में 28 फरवरी, 2022 को सेवानिवृत हो रही है। जिले के 20 महाविद्यालय का नेतृत्व किया व जिले कि उच्च शिक्षा को नये आयाम दिये। प्राचार्य पद पर कार्यरत होते हुए क्षेत्र की युवा शक्ति को शैक्षिक मार्ग दर्शन एवं विद्यार्थी हितार्थ श्रेष्ठ परिणामधर्मी प्रशासन से वृहत् अभिभावक, शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रबुद्ध शोधार्थियों को लाभान्वित करती रहीं। प्राचार्य पद पर महिला शक्ति की अंतर्हित संवेदनशीलता ने डॉ. रचना जी के रूप में एक कुशल प्रशासक हमें देकर राजसमंद का मान बढ़ाया और राजसमंद झील संरक्षण, संवर्द्धन हेतु सक्रिय रही हैं। साथ ही अण ुव्रत आचार्य कुल सदृश राष्ट्रीय संस्थान की अध्यक्ष के रूप में इस क्षेत्र में समादृत रही हैं। पर्यावरण के प्रति जन जागरण हेतु समर्पित डॉ. रचना जी को सन् 2009 में विज्ञान भवन, नयी दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति जी श्रीमती प्रतिभा जी पाटिल ने प्रतिष्ठित इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरुस्कार से नवाजा था। राजसमंद वासियों के लिये वह क्षण अत्यधिक गौरवशाली रहा। ऐसे ही सामाजिक सम्पृक्ति के माननीय सम्मानों की श्रृंखला में आपको ज्ञान भारती द्वारा Best Citizen एवं Women Excillency सम्मान, राजमणि, राजसमंद रत्न, महिला रत्न, साहित्य श्री कुसुमाकर सम्मान प्राप्त हुए जो हम सबके लिये अति गौरव का विषय हैं।

डॉ. रचना जी महिला शक्ति, युवा सोच, वरिष्ठ जन संबलन सदृश विविधोन्मुख योजना प्रायोजना से संबद्ध रहीं। संभवतः इन समस्त उपलब्धियों के प्रसंग में ही उन्हें जहां यूनेस्को एवार्ड से सुशोभित किया गया। वहीं बर्मा में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में आपको समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे सम्मान से भी समादृत किया गया।

एक सफल शिक्षिका के रूप में आपकी समानान्तर उपलब्धियों के अनेक आकाश सृजित हुए हैं। स्पीक मेके जैसी शीर्षस्थ शास्त्रीय संगीत की संस्था से आप संबद्ध रहीं। वहीं एक्यूप्रेशर प्रविधियों की भी समाज में प्रमोटर रही हैं। अणुव्रत पुरस्कार सहित आप राजस्थान प्रदेश आचार्य कुल की अध्यक्ष के रूप में भी विनम्रतः जुड़ी हुई हैं। यही नहीं स्काउट गाइड आन्दोलन के मंच से सेवा कार्य स्वरूप आप जिला गाइड आयुक्त से जुड़ी हैं एवं राजसमंद से आगे बढ़कर राजस्थान पर्यंत हिरण्यमयी उपलब्धियों को अर्जित कर आपने नगर का गौरव बढ़ाया है।

पांच अंतर्राष्ट्रीय और पैंतीस से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिनिधित्व सहित उच्च स्तरीय शोध निर्देशन व दस से अधिक पुस्तकों का लेखन कर तीन विद्यार्थियों को पी.एच.डी. उपाधि से विभूषित कराने में विशेष भूमिका का निर्वहन करने वाली डा. रचना जी राजसमंद की प्रतिभा सम्पन्न बेटी हैं जिनकी पितृ व मातृगृह की उल्लेखनीय साहित्यिक व शास्त्रीय परंपराएं हैं। सर्वश्री रमानाथ शास्त्री, मथुरानाथ शास्त्री, ऋषिकेश-शारदा शास्त्री, कंठमणि शास्त्री (सभी संस्कृत भाषा व शास्त्र के ज्ञाता), गोकुलेंदु शर्मा (कलावंत), डॉ. गोपाल शर्मा (निदेशक हिन्दी निदेशालय), कलानाथ शास्त्री (निदेशक, राजस्थान संस्कृत निदेशालय), विश्व मोहन भट्ट (विश्व प्रसिद्ध संगीतकार), गो. ब्रजेश कुमार जी महाराज, डॉ. केशव शर्मा (प्रोफेसर, बोत्सवाना वि.वि.), जगदीश शर्मा (आईएएस)] डॉ. सुषमा जी (साहित्य विद्) कतिपय उसी प्रबोधन परंपरा के सशक्त हस्ताक्षरों का आशीष इन्हें मिला है। डॉ. रचना जी की राजकीय सेवा की यात्रा का यह पटाक्षेप नहीं है। यह तो पट परिवर्तन है जिसके बाद वे एक नयी ऊर्जा के साथ सामाजिक जीवन में कतिपय नए रंग बिखेरने हमारे साथ आने को सन्नद्ध हैं।

।। शुभास्ते पंथान् सं तुरूं ।।

**डॉ. राकेश तैलंग**
**वरिष्ठ साहित्यकार, राजसमंद**


जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

मेवाड़ी जयवर्द्धन

व्यंग

# कारवां गुजर गया, धूल के गुबार देखते रहे

पगडंडियों के देश में रास्ते पर बोर्ड लगना नई क्रांति का आगाज है। बोर्ड पर लिखा था– **मोही जाने का रास्ता।** रास्ते पर बच्चे गिल्ली डंडा नहीं खेल सकते। जिस तरह एक्सप्रेस वे पर टू व्हीलर और थ्री व्हीलर नहीं चल सकते। गिल्ली से बड़े- बड़े गिट्टी के टुकड़े हैं। क्रिकेट का तो सवाल ही नहीं? बॉल के बराबर पत्थर। पत्थर फेंके या बॉल? रास्ता उसे कहते हैं, जिस पर डामर नहीं चिपका हो। गाड़ी निकलने पर न आने वाला दिखाई दे, न जाने वाला। गांव के युवा वैज्ञानिक खोज में लगे हैं कि ऐसी लाइट या चश्मा तैयार किया जाए, जिससे धूल के पार देखा जा सकें। चश्मा लगाकर लताजी को याद कर सकें, चलो दिलदार चलो, धूल के पार चलो।

सड़क उसे कहते हैं, जिस पर चलने से टोल लगता है। रास्ते पर टोल नहीं लगता। रास्ते पर आदमी चलते हैं। आदमी पर टोल नहीं लगता। टोल उसी पर लगता है, जिसके पैरों में पहिए और पहियों में रबर लगा हो। रास्ते को सड़क बनाने की कोशिश की गई थी। सड़क बनाने में जिन्दगी गुजर जाती हैए तब कहीं जाकर सड़क बनती है। सड़क बनाना बच्चों का खेल नहीं है। खेल.खेल में सड़क नहीं बनती। खिला.पिला कर सड़क बनती है। सड़क विकास का प्रतीक है। सड़क के विकास में लगे सबका विकास होता है और सबके विकास के बिना सड़क का विकास नहीं होता।

सड़क के लिए ठेकेदार की जरूरत होती है। जैसे ही ठेकेदार मिल जाता है, सड़क बनना शुरू हो जाता है। भारतीय संविधान में कहीं नहीं लिखा कि सड़क बनाने के लिए एक ही ठेकेदार पर निर्भर होना चाहिए? एक ठेकेदार से नहीं पटी तो दूसरे को पकड़ लिया। ठेकेदार और गर्ल फ्रेंड कितनी ही बदल लो कोई फर्क नहीं पड़ता। सड़क बनते- बनाते कितने त्योहार निकल जाते हैं। होली पर सड़क रंगीन हो जाती है। दिवाली पर मिठाई पर चांदी के बर्क से चमक उठती है, ईद पर नए कपड़ों में लकदक हो जाती है और तो और क्रिसमस पर सांताक्लाज बनकर आ जाती। ठेकेदार वही टिकता जो त्योहार मनाने का तरीका जानता है।

रास्ते को सभी सड़क मान बैठे थे। सड़क वैसी नहीं थी, जैसी आम होती है। आम सड़क में डामर होता है, लेकिन इसमें डामर नहीं था। गिट्टी थी, धूल थी, धूल के गुबार थे, गुबार में ईमानदारी नहीं दिखाई देती।

खैर सड़क तो सड़क है। सड़क है तो किनारे भी हैं। किनारों पर पेड़ होते हैं। जरूरी नहीं कि सड़क किनारे पेड़ हों? पौधारोपण तो कई बार हुआ, लेकिन रेत के जंगल में पेड़ नहीं होते। ठेकेदार ने सड़क बनाने की कोशिश की, मगर डामर की तरह वह भी पिछले कई महिनों से गायब है।

विशेषज्ञों की अपनी अपनी राय है। कुछ लोग कहते हैं– सड़क के साथ सबका विकास होता है। जब ठेकेदार का विकास कम होता है तो वह दिखाई नहीं देता। अक्सर बड़े शिकार के बाद अजगर हिलता- डुलता नहीं है। रास्ता सड़क बन गया। रास्ता घर की ओर जाता है और सड़क, रोजगार की तलाश में। रोजगार की तलाश में गई सड़क, घर का रास्ता भूल जाती है। जो सड़क पर चल कर जाते हैं, वे लौटकर घर नहीं आते।

कांकरोली के मास्साब कहते कहते गुजर गए। हमें अंतिम समय तक प्रयास करना चाहिए। साइकिल से रास्ता पार करने का प्रयास कर रहे थे, पीछे से टेम्पो वाले ने जिन्दगी पार कर दी। वह मास्साब को बचाना चाहता था। उल्लू की तरह आंखें फाड़ रखीं थीं, हेडलाइट जला रखी थी, लेकिन धूल इतनी थी। न तो मास्साब दिखे न साइकिल। चीख तो सुनाई दी, लेकिन धूल में चीख थोड़े दिखाई देती है। धूल में टेम्पो वाला भाग लिया, न टेम्पो दिखा न नम्बर। अब बोर्ड लगने से रास्ता सड़क बन चुका था। ये सड़क मुक्तिधाम की ओर जाती है, लेकिन रोजगार की तलाश में।

नीरज बरबस याद आ गए। गाड़ियां निकलती रहीं, हम धूल के गुबार देखते रहे।

**सुनील जैन 'राही'**
**व्यंग्यकार, नई दिल्ली**
**मो. 9810 960 285**

# रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन के क्षेत्र में एक नया कदम

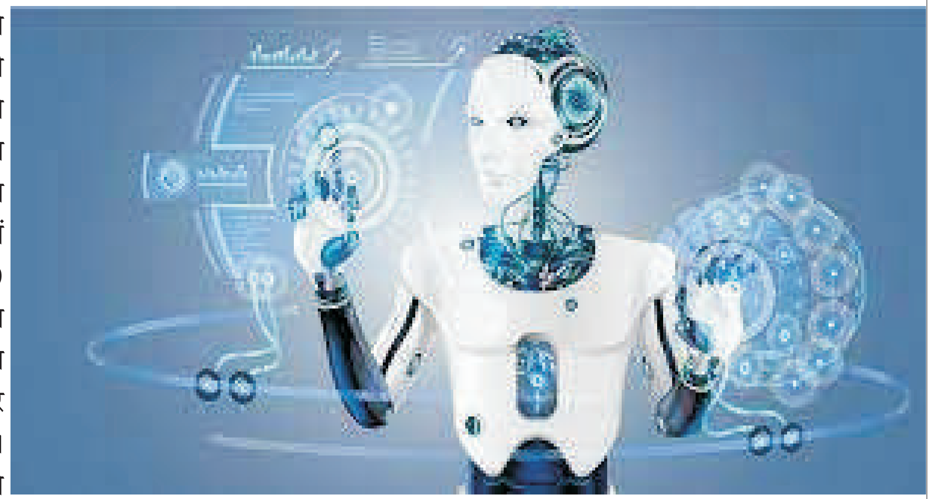

जैसा कि हम जानते हैं कि आज का युग तेजी से भागता हुआ युग है और कहीं न कहीं यह मशीनों का युग भी है। और स्पष्ट शब्दों में कहें तो आज का समय मशीनों से भी आगे निकल कर सॉफ्टवेयर और वायरलेस की दुनिया का युग बन चुका है। इस दौरान रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन, ऑटोमेशन के क्षेत्र में एक नया कदम है। यहां यदि मैं कहूं कि आपका नित्य प्रतिदिन का 50 से 70 प्रतिशत तक का कार्य अगर ऑटोमेटेड कर दिया जाए, या स्वचालित मशीन या सॉफ्टवेयर के माध्यम से कर दिया जाये, या यह किया जा सकता है, तो आप विचार कर सकते हैं कि आप का कार्य कितना आसान हो जाएगा। रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन वर्तमान और भविष्य में आने वाली रोबोटिक प्रक्रियाओं को सॉफ्टवेयर के माध्यम से किए जाने का जीवंत प्रमाण है।

अगर हम परिभाषा की बात करें तो हम कह सकते हैं कि रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके रिपिटेटिव कार्य एवं रूल बेस्ड डिजिटल कार्य को किए जाने की प्रक्रिया का नाम है। यहां पर रोबोट का अभिप्राय कंप्यूटर के उस सॉफ्टवेयर से है जो यांत्रिक, भौतिक एवं स्वचालित इकाई के समान कार्य करता है। अतः यहां पर यह कहा जा सकता है कि भविष्य में जैसा कि हमारी धारणा है कि रोबोट एक यंत्र मानव की तरह दिखाई देने वाला उपकरण है। जो कि हमारी कार्यों में मदद करता है। इस तरह का रोबोट दिखाई ना दे कर सॉफ्टवेयर के माध्यम से हमारे सारे कार्य किए जाएंगे। अर्थात यंत्रमानव अब सॉफ्टवेयर के रूप में बहुत सी जगह पर अपना स्थान ले लेगा। अतः कई स्थानों पर रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन को रोबोटिक सॉफ्टवेयर के रूप में संदर्भित किया जाता है । यह अनिवार्य रूप से एक बिजनेस ऑटोमेशन प्रोसेस टेक्नोलॉजी हैए जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग भी किया जाता है। इस प्रक्रिया में सॉफ्टवेयर को मानव मस्तिष्क व तकनीकी के माध्यम से पहले शिक्षित किया जाता है। उसके बाद सॉफ्टवेयर मानव द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्य को मानव के समान ही संपादित करता है। अतः मनुष्यों की सहायता करने वाला आरपीए रोबोट न केवल मानव की तरह व्यवहार करता है बल्कि मानव द्वारा निर्मित नियम आधारित व्यवसायिक प्रक्रियाओं की नकल और निष्पादन भी करता है।

आरपीए का विकास- रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन की विकास यात्रा बहुत ज्यादा पुरानी नहीं है। इसकी 1990 के दशक से शुरुआत हुई है। इस समय को प्री.आरपीए समय के नाम से भी जाना जाता है। इस दौरान सामान्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करके कुछ निर्णय लेने की प्रक्रिया को इसके अंदर संपादित किया जाता था । अगला दशक 2000 जिसे आरपीए-अराइवल (आगमन) के नाम से जाना जाता है इस दौरान सोफ्टवेयर टेस्टिंग और सॉफ्टवेयर क्वालिटी एश्योरेंस और वोट का प्रयोग किया जाने लगा था जो कि बिजनेस प्रोसेस ऑटोमेशन के अंतर्गत आता था। इसके अगले चरण 2010 से 2016 के बीच में आरपीए-एडॉप्शन (ग्रहण) का उद्भव हुआ, जिसके अंतर्गत आरपीए का संयोजन ऑप्टिकल कैरक्टर रिकॉग्निशन और इमेज रिकॉग्निशन के साथ किया गया। इस दौरान आरपीए और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मध्य विशेष प्रयोग किए गए और आरपीओ को ऊंचाइयां प्राप्त हुई। वर्ष 2016 से 2021 का समय आरपीए-ग्रोथ (उत्थान) का समय कहलाता है।

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

उल्लेखनीय है कि इस समय 20 से ज्यादा कम्पनियां रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन के क्षेत्र में स्थापित हुई और मार्केट में एक नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया। अगला समय अर्थात 2022 से आने वाला समय आरपीएफ फ्यूचर (भविष्य) के रूप में जाना जाता है जिसके अंतर्गत रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन की सहायता से कॉग्निटिव कंप्यूटिंग, बिग डाटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग आदि जैसे बड़े-बड़े कार्य संपादित किए जाएंगे।

रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन मौजूदा समय मे सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन, तकनीकी संसाधनों और संरचनाओं का उपयोग करके मानवीय दोहराव वाली आवश्यक प्रक्रिया को स्वचालित करने के लिए सॉफ्टवेयर रोबोट बॉट का उपयोग कर रहा है। बॉट एक ऐसा एजेंट है जो आप की ओर से कार्यों की व्याख्या और कार्यों का निष्पादन करता है। अतः हम कह सकते हैं की रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन को कार्य रूप में लाने वाला भाग बॉट के नाम से जाना जाता है। बॉट एक सॉफ्टवेयर है जो मनुष्य के समान कार्य करता है। आरपीए बॉट समय लेने वाले कार्यों को बहुत तेजी से न्यूनतम समय में कर सकता है। जिनके लिए अत्यधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है। इन कार्यों में डाटा स्क्रेपिंग और निष्कर्षण, रिपोर्ट निर्माण व वितरण, ब्रेव ब्राउजर का स्वचालन और अनगिनत अन्य व्यवसायिक प्रक्रिया शामिल है। यहां पर मैं बता देना चाहता हूं कि कुछ बॉट ट्रिगर के आधार पर चलते हैं एवं कुछ बॉट शेड्यूल किए जाते हैं, और कुछ बॉट चौबीसों घण्टे अपना कार्य करते रहते हैं।

बॉट को मुख्यतः दो बड़े प्रकार में बांटा जाता जा सकता है। यह मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं- 1. अटेंडेंट बॉट और 2. अनअटेन्डेट बॉट

अटेंडेंट बॉट को उपस्थित वोट भी कहा जाता है। यह मानव के दैनिक कार्यों को आसान बनाने के लिए मानव कर्मचारियों के साथ कार्य करते हैं। और जब कोई उपयोगकर्ता उन्हें चलाता है तो वह अपना निष्पादन शुरू कर देते हैं। उपस्थित ऑटोमेशन स्क्रीन स्क्रेपिंग या जी.यू.आई ऑटोमेशन जैसी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है। अनअटेंडेट बॉट पर्दे के पीछे काम करते हैं, और एक क्रिया द्वारा ट्रिगर चलित होते हैं। अनअटेंडेट ऑटोमेशन फाइल ट्रांसफर या डाटा बेस प्रोसेसिंग जैसी प्रक्रियाओं को करना सुनिश्चित करते है।

## आरपीए क्या कर सकता है

आरपीए एक एप्लीकेशन को दूसरे एप्लीकेशन द्वारा संचालित कर सकता हैए तथा एक एप्लीकेशन का डाटा दूसरे एप्लीकेशन में ट्रांसफर कर के स्वतः ही निष्पादित कर सकता है। डाटा को कई क्षेत्रों में डालने व डाटा को फिर से दर्ज करने तथा डाटा में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करना आदि कार्य किए जा सकते हैं। यह सामान्य मानव द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया जैसे डॉक्यूमेंट की फॉर्मेटिंगए डॉक्यूमेंट में से किसी विशेष भाग को निकालना, कॉपी और पेस्ट करना, जिस तरीके से मनुष्य किसी सॉफ्टवेयर को संचालित करता है उसी तरह से उस सॉफ्टवेयर को संचालित करना। तथा नियमों और शैड्यूल के तहत सॉफ्टवेयर से कार्य को संचालित कर देना। रोबोट या बॉट एक सॉफ्टवेयर की तरह कार्य करता है जो ग्राहक की प्रोफाइल को उन्नत सलाह प्रदान करना। बॉट कई उद्यम प्रणाली और उद्योगों के समर्थन से आदेश की जानकारी जैसे कार्य कर सकता है।

**डॉ. संजय गौड़**
**प्रोफेसर, लेखक एवं कवि**
**राजसमंद, 9784652469**

# राजस्थानी केणावतां

**आपाणी मायड़ भाषा मेवाड़ी री मिठास गणी है, या सुहावणी, मन भावणी, गणी चोखी लागे। कहावतां सूं बोली रे मांयने रस आवे, आनन्द भर जावे, वाक्य रो वजन वद जावे। मेवाड़ रा लोग वात वात में केणावतां ने काम में लेवे हैं, मेवाड़ी भाषा गणी भागशाली है जो इण में कहावतां रो समृद्ध भण्डार है। कहावतां सूं बोली रे मांयने सरलता, रोचकता, जीवटता, प्रवाह और चमत्कार आ जावे। आपां बोल चाल री कहावतां रो आनन्द लेवां। देखिए, प्रमुख केणावतां और अनुवाद–**

1. धान खावे धणी रो, गीत गावे वीरा रा
   फायदा किसी से उठाना और प्रशंसा किसी दूसरे की करते रहना।
2. आव रे बळद म्हंने मार
   जाती आफत (परेशानी) को अपने ऊपर लेना।
3. कान रो काचौ होणौ
   सुनी सुनाई बात पर या शिकायत पर जल्दी विश्वास करने वाला होना।
4. भरोसां री भैंस रे पाडो वे
   जिस कार्य से विशेष आशा हो लेकिन वैसा लाभ नहीं होना। दूसरों के भरोसे रहने पर कार्य बिगाड़ता है।
5. दुबळा ने दो अषाढ़– किसी विपत्ति में फंसे कमजोर व्यक्ति पर और विपत्ति आ जाना।
6. गरज री टेम पे गधा ने बाप वणावणों
   स्वार्थ सिद्धि के लिए अयोग्य व्यक्ति की भी खुशामद करना।
7. आळस नींद किसान ने खोवे, चोर ने खोवे खांसी।
   टक्को ब्याज मूळ ने खोवे, त्रिया ने खोवे हांसी।।
   किसान को नींद व आलस्य नष्ट कर देता है, खांसी चोर का काम बिगाड़ देती है, ब्याज के लालच में मूलधन भी डूब जाता है, स्त्री को हंसी, मसखरी बिगाड़ देती है।
8. गणां मामा रो भाणेज भूखां मरे
   बहुत लोगों के भरोसे रहने पर एक भी समय पर काम नहीं आता है।
9. पराई हांसी गोळ सूं मिठी
   दूसरों की हंसी (निन्दा) सुनने में बड़ा आनंद आता है, जो हद से ज्यादा प्यारी लगती है।
10. मूरख मनख नै हमझा वा में, ज्ञान गांठ रो खोवों।
    कोयलो वे–वे नी ऊजळो, सौ मण साबुण धोवों।।
    मूर्ख को समझाते हुए अपनी गांठ का ज्ञान भी चला जाता है, वह मूर्ख का मूर्ख रहता है। अब भले ही सौ मण साबुन ही क्यों न लगाया जाए, कोयला तो कोई सफेद होने से रहा।

गांव रे मांयने दो भाई रेवता हा। मोटको भाई सयानो और छोटको भोळो हो। एक दन मोटके भाई छोटा भाई ने कियो भाया मारे आज–काल खेतां में काम गणो है, अणी वास्ते म्हूं तो म्हारे ससुराल जा नी सकूं। भाया थूं जा अर थारी भाभी ने वणी रा पीहर सूं ले आ। छोटो भाई बोल्यो भाई साहब म्हूं भाभी ने लेवा रे वास्ते नी जाऊंला, अणी वाते क वठा री लुगाइयां तरेह तरेह री वातां म्हंने पूछें लां, हंगळी वातां रा जवाब म्हूं नी दे सकूं। जदी मोटके भाई वणी ने हमझायो क भाया थूं गणी वात चित करे मती, हां या ना में वणा ने उत्तर दे दिजे। यो काम तो थूं कर भी सकें है। मोटका भाई की या राय वणी ने पसंद आई, पछे वो आपणी भाभी ने लेणे वास्ते ग्यो। भाई रा ससुराल पूग्यो वठे री लुगाइयां उण सूं पूछ्यो। थां आपणी भाभी ने ले जाणे रे खातिर आया हो ? तो वो बोल्यो हां। पछे वणा पूछ्यो– पामणा खुद नी आया ? तो वो बोल्यो ना। पछे वणा पूछ्यो– पामणा हाजा मांदा है कई ? तो वणी होच्यो क भाई मान्दो तो नी है पण अबे हां केवण री बारी है। अणी वास्ते वणी कह दियो क हां। पछे औरतां पूछ्यो। कई वे चाल फर नी सकें ? तो वो बोल्यो ना। पछे औरतां पूछ्यो– कई वैद्यां (चिकित्सक) बिल्कुल उत्तर दे दिदो है ? वो बोल्यो हां। जदी लुगाइयां पूछ्यो– उण रे बचणे री कोई उम्मीद नी हैं ? तो वणी उत्तर दिदो ना। आखिर मांयने लुगाइयां पूछ्यो– जंवाईसा मर ग्या कई ? तो वो बोल्यो हां। इतरो हुण तां ई घर रे मांयने रोणो– धोणो मच ग्यो। भाभी की चूडियां तोड़ न उणने विधवा रा वेश (पोशाक) पेराई दिदा, अणी रा केड़े वो मूरख आपणों मुण्डों ले र अकेलो ही आपणे घर तांई लौट आयो। वणी ने अकेलो आयो देख र जद उण रे मोटके भाई पूछ्यो– भाया कई वियो ? थारी भाभी ने लेर क्यों नी आयो ? वणी उत्तर दिदो क भाभी तो विधवा वे गी है। मोटका भाई ने दुख का लारे रीस आई बोल्यो मूरख कई बकवास करे है। जदी म्हूं मौजूद हूं तो भला वा विधवा कस्यान वे सके ? तो छोटो भाई बोल्यो कां नी वे सके ? आपां घर रे मायने सब जणा मौजूद वेता दकां आपाणी मां विधवा कस्यान वे गी ? वणी रो यो उत्तर हुण न मोटके भाई आपणों माथो पकड़ लिदो, अणी मुरख ने म्हारे ससुराल भेज न म्हें गलती किदी। अणी पे विश्वास करणो भींत पे माथो पटकवा रे जस्यान है। हांची वात की है, मूरख मनख ने हमझा वा में ज्ञान गांठ रो खोवों। कोयलो वेवे नी ऊजळो, सौ मण साबुण धोवो।

**राम गोपाल आचार्य**
**पीपली आचार्यान राजसमंद**
**मो. 9929215040**

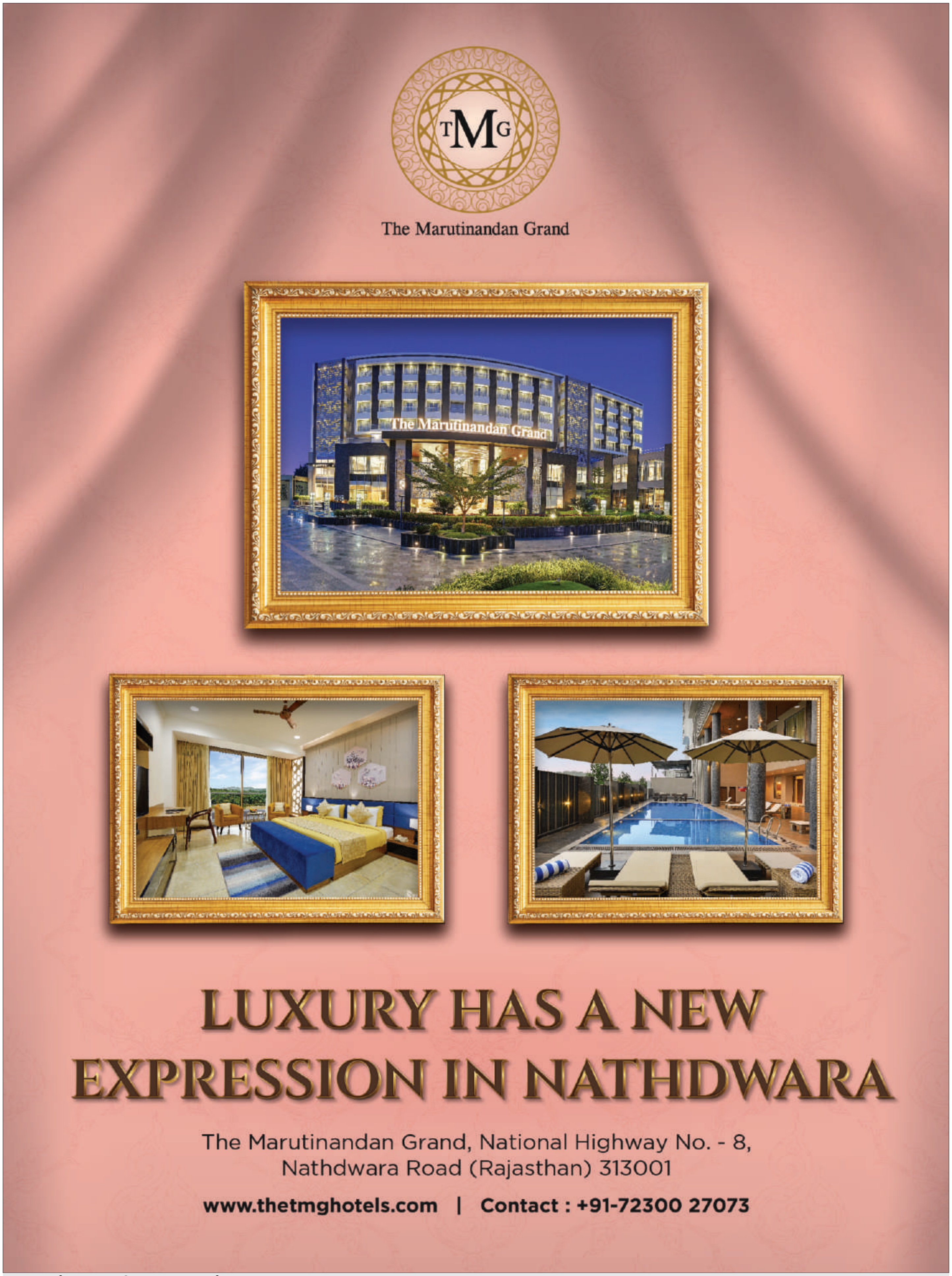
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

देश की ज़रूरतों के लिए
देश का अपना ज़िंक!

# हिन्दुस्तान ज़िंक लिमिटेड

आप सभी को

# गणतंत्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

# GALVANIZING A GREENER INDIA

Ranked globally in the Top 5 of the Dow Jones Sustainability Index 2021*

World's 2nd largest integrated Zinc-Lead producer and World's 6th largest Silver producer

Certified 2.41 times Water Positive company

## Hindustan Zinc Limited

Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur -313004 | Rajasthan | India
P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1966PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.linkedin.com/company/hindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

*In the Metal & Mining sector as of 12th Nov'21



जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews | jaivardhannews.com | liverajsamand | जयवर्द्धन